Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

કંકાલી તીલા–મથુરા—

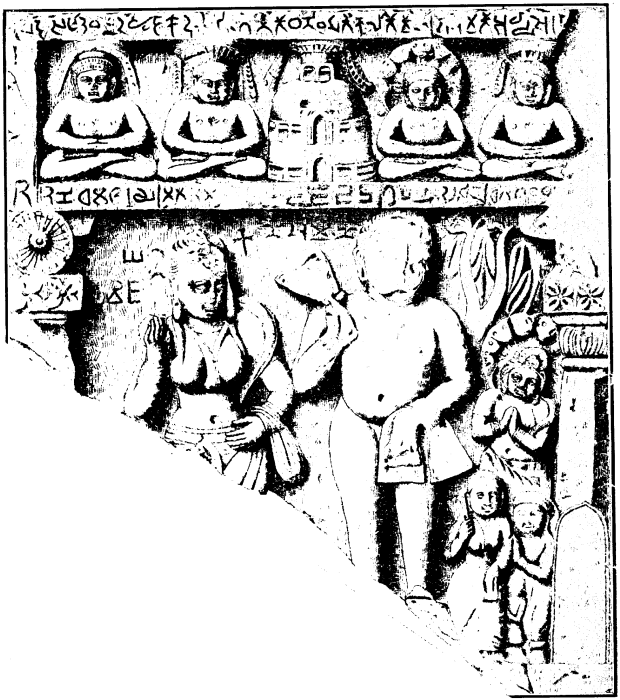

સં. ૯૫ માં ધનહસ્તીની ભાર્યાએ, ભેટ આપેલી
પથ્થરની શીલા જેમાં જૈન યતિ કણ્હની મૂર્તિ છે.

For Private And Personal Use Only

सवत्सातंवमें मिकले हुए कात्र सागिओंके लेख

१

संवत १२६० वर्षे फाल्गुन वदि १
सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय
अरिष्टनेमिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं
श्रीरत्नप्रभसूरिभिः॥

२

संवत १२६[illegible] वर्षे फाल्गुन वदि १
श्री महावीरबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं
श्रीरत्नप्रभसूरिभिः॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(જે- ૬૧૭ ૬૮[૩]
૫૮
૭૮
૭૮
૭૮
૧૧
૭
૫૪

૪૨૮
૬૧૭

૧૦૪૫ (વિ૦ ૫૮૫)
૬૦

૧૦૫૬ | ૧૧૦૫ (વિ૦ ૬૪૫)

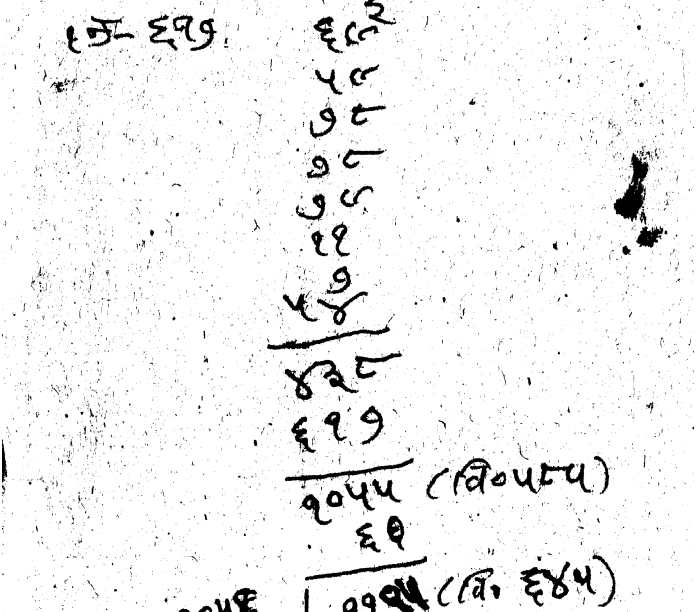

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगत(रचना ×
तीरथ
बारह मनस्थाने चक्रवर्ती ×
आतचरस्तान स्थान
२२। ५२। ९२ जिनालय
अष्टापद-निर्वाण का
श्रावक पेढाया साह ×
आसाहे श्रमात्र ×
रुद्रायतन ×
त्रैलोक्यगामनी ×
त्रिपुरसायतन ×
जिनालयदिमारा
पीठ
आसाकोहन
मंडोवर
गीति
जगौह
द्वार
उदुम्बर
कौली
शिखर
रेखा
शिखरोदय
श्रीमंतरोदय
[illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेखा मूल के १० भाग
रेखा के ५ भाग ५
स्कंध आमलसारक ×
अंडक गताना
आमलसारक
प्रासाद कलश
[illegible] द्वार
× कलश
× दण्ड
वैराज्य प्रासाद
सांधार प्रासाद
मंडप
गूढमंडप
चतुष्कीमंडप
रंग मण्डप
बलाणक
मेघनाद वितान
पीठ
जिन्नादि दोष
देवकुल
× प्रतिमा मान
~~सर्व प्रतिमा~~ [illegible]
प्रतिमा स्थान
प्रतिमा प्रतिष्ठा
प्रतिष्ठा मण्डप
कुंड विधि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

× आसाढ सु० १४ चालिसी
सुकनकर – जिनशाह बालाविलत
× भूमी परीक्षा
वास्तु लेखन – पूजन
× बारावेपारी निमित्त काल
× आय व्यय – नक्षत्र – अंशांक
× नागवास्तु – शेष चक्र
× कूर्म – निवेशन
× कूर्मशिलास्थापना
× अष्टशिला स्थापना
सत्र पात मुहूर्त
शांति [illegible] मुहूर्त
७ प्रासाद
१४ शालिका
प्रासाद हस्तादि परिमाण सीमा
साकार – निराकार प्रासाद हस्त सीमा
मेरु प्रासाद हस्त परिमाण
प्रासाद द्वार निर्गम [illegible]
प्रासाद कालेजा
प्रासादाग्र निर्गम आदि मर्यादा
प्रासाद भाग मर्यादा
ॐकारानुसारी प्रासाद
प्रासाद उत्पत्ती

For Private And Personal Use Only

(१)

सं० १५१९ वर्षे फागुण सुदि ११ रवौ पुष्ये
उपकेश ज्ञातौ पीपाडा गोत्रे साह केला
भा० कपूरदे पु० देल्हा पद्मा [illegible] – – श्रेयसे
श्री आदि [illegible] नाथ बिंबं का० प्र० वृद्ध गच्छे
श्री यशोदेवसूरि पट्टे श्री नन्नसूरिभिः ॥

(२)

संवत् १५२५ वर्षे फागु सु० ९ प्राग्वाट-
ज्ञातीय व्य० कीता भा० [illegible] पुत्र
व्य० [illegible] भार्या [illegible] पु० [illegible]
[illegible]
कुटुंब युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं
प्र० तपागच्छे श्री [illegible]
लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(३)

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ११ (१०) बुधे प्राग्
वाट ज्ञातीय व्य० [illegible] भा० [illegible] पु०
[illegible] भा० [illegible] पु० सामल भा० [illegible]
सहितेन पितृ [illegible] निमित्ते स्वात्म
श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट
का० प्र० मड्डाहड्डीय गच्छे भ० श्री कमलप्रभ-
[illegible] सूरि पट्टे श्री विजयदेवसूरिभिः ॥
मड्डाहड वास्तव्य ।

१ उदय

गर्भगृह

प्रत्येक गर्भगृह के विस्तार से उसके [illegible]

के भाग से सवायो, अष्टांश युक्त, [illegible]

अष्टमांश, षष्ठांश, चतुर्थांश और द्वितीयांश युक्त ज्येष्ठ मध्य और कनिष्ठ [illegible] गर्भगृह की होती है। [illegible]

बृहत् प्रासादों के गर्भगृह का उदय उसके व्यास को अष्टमांश अथवा षष्ठांश युक्त करने से आता है। मध्य प्रासादों के गर्भगृह का उदय मान उसके व्यास (विस्तार) से सवाया होता है। कनिष्ठ प्रासाद के गर्भगृह का उदय उसके विस्तार से डेढ़ा करना चाहिये।

गर्भगृह के उदय के बारह भाग करने से १ भाग की कुंभी ८ भाग का स्तंभ, ॥ भाग का भरणा (भरणी) १ भाग का शिरा और १ भाग पाट की ऊंचाई होगी।

पाट के ऊपर भाग से [illegible] गृह्य का विस्तार से आधा करना। पांच सात [illegible] की [illegible] करना। इस क्रम से गर्भगृह

का समय (गर्भ में रहने की अवधि) कितना
चाहिये।

इस बारे में आगम (जैन) संहिता में निम्न वैदिक श्लोक
दृष्टिगोचर होते हैं —

गर्भवासः सप्तदिनाः सप्ताहः सार्धसप्त च।
नवमासाश्च यहा नैव लोकप्रधानम् [illegible]॥१॥
तत्र (च) [illegible] (लो) [illegible] मासैर्नैकेन [illegible]।
[illegible] सार्धसप्त भागार्धे [illegible] (भा) तल [illegible]॥
[illegible] सार्ध (एकः) [illegible] ([illegible])
गर्भिता सार्धमासेन कुर्यात् [illegible]॥७॥
[illegible] तु [illegible]।
[illegible] प्रकारेण कुर्यात् गर्भस्थितिं [illegible]॥८

हेव मंदिर, वैसे ही आदि में "शिलांशक" हित
करता है। दुकान, और बाग तथा
भैरव के मंदिर में "धमांश" हितकर
है और हस्तिशाला, अश्वशाला,
~~[illegible]~~ यान (पालकी आदि) न-
गर और राजाओं के घरों महलों में
'राजांशक' देना अच्छा है।

अंशक निकालने की प्रक्रिया में नक्षत्र
मूल राशि और गृहस्वामी का
उल्लेख हुआ है। पाठकगण के
समझने के लिये हम इनके सम्बन्ध में
यहाँ पर कुछ विशेष विवरण करना
उपयुक्त समझते हैं।
शिल्पशास्त्र में प्रत्येक नक्षत्र का एक
अंशक माना गया है जैसे मूलराशि
~~[illegible]~~ हैं। जिनको
स्वामी नक्षत्रों को जन्म के नक्षत्र राशि के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साफ लिख देते हैं जिससे [illegible]
[illegible] है यह [illegible]
सो जान जाते [illegible]।
[illegible] कालिका २४।
[illegible] २६।
[illegible] २८।
[illegible] रागद-
[illegible] ख्याति
१२ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] नतौ २९।
[illegible]
[illegible] जाते हैं। [illegible]
[illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरंभ मुहूर्त

गृह, व्यापार आदि के कार्यारम्भ के पहले मुहूर्त का निर्णय करना आवश्यक होता है अतः हम यहाँ मुहूर्त विषयक कुछ सर्व सामान्य बातों को लिख कर फिर गृहारम्भादि के मुहूर्त लिखेंगे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुहूर्त में व्यतीपात और वैधृति में पूर्ण और बाकि
के योगका पूर्वार्ध अवश्य [illegible] छोड़ना चाहि-
ये। किसी भी कुयोग की प्रारम्भ की ३ घड़ियां तो
छोड़नी ही चाहिये। व्यतीपात की ७ आश्लेषा की ६।
मघा की ५। यमघंट की १। कालमुखी की ८ ४
घड़ियां [illegible] अत्यन्त त्याज्य हैं। इस भांति
तथा वर्जित वार में काम करना हो तो आदि की
४-४ घड़िकायें छोड़कर करना। कहा है—
सर्वेषां च कुयोगानां त्यजेदादि घटीद्वयम्।
व्यतीपातस्य [illegible] सदा [illegible] नाडिकाः।
[illegible] कालमुखस्य [illegible]
इसको लिये कुलत्रेच नाडिकानां [illegible]।

करण (पृ-१२ में देखो)

करणों में त्याज्य करण [illegible] एक है जिसका
नाम भद्रा है।
भद्रा के सम्बन्ध में [illegible] ज्योतिषी बहुत विचार
रखते हैं। भद्रा शुभ कार्यों में वर्जित है [illegible]
इसमें कोई सन्देह नहीं है, परन्तु भद्रा को
नाम मात्र से [illegible] में [illegible] कर [illegible]
रहना चाहिये। भद्रा हितकर है या अहितकर
यह पहले निर्णय कर लेना चाहिये (७)

For Private And Personal Use Only

१२(४)

८।१४।१५ इन तिथियों मे भद्रा विष्टिका
वास रहा करता है। इस विष्टि का स्वरूप
सर्पिणी है। इस के मुख को अवश्य छोड़
देना चाहिये। ३।४।१०।११। इन तिथियों में
भद्रा रात्रि में अन्त आती है। इसका नाम
[illegible] है। [illegible]
[illegible] है।
भद्रा का मुख ([illegible])

नक्षत्रों के साथ [illegible] दिये हुए अंक जिन
नासंख्याके मुहूर्तों [illegible]
[illegible] हैं – हस्ता, कृत्तिका, कोलकेता आदि
होनेसे शुभ कामों में वर्जित हैं।

ग्रह बल [illegible]

जिस ग्रहके बारमें जो कार्य विहित है, वह [illegible]
[illegible] ग्रह बलवान होनेसे ही [illegible]
[illegible] कार्य [illegible] सिद्ध होता है। [illegible] और
ग्रह के बलहीन होने [illegible] कार्यसिद्धि
नहीं होती जैसे, [illegible] रोगी ग्रह बल
[illegible] माना गया है। [illegible]
[illegible] इससे विपरीत उदित,
नीच, स्वांत, शत्रुगृही, [illegible] क्रूर दृष्ट ग्रह निर्बल
माना गया है। [illegible]
[illegible]

इस विषय में निम्नलिखित श्लोक भी स्मरणीय है

"नाडे ग्रह स्वोच्चस्वभावगहस्थ,
कार्यं शुभोद्दिष्टमपीति सिद्धम्।
नाशेन हैं [illegible] हस्था,
[illegible] [illegible]॥२॥"

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

बनते हैं।

रवि [illegible] हस्त। पुन। रोहि। मृग। उत्तरा ३। अश्वि।
मूल। रेवती। आश्लेषा। धनिष्ठा नक्षत्र और १।
८।९। ~~ऐसे कोई~~ तिथि ~~होने से सिद्धि योग होता है~~।

सोम [illegible] - मृग। रोहि। अनु। उफा। हस्त। श्रवण। शतभि।
पुष्य। उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और २।९ तिथि [illegible]।
~~तब त्रिकालसिद्धि योग होता है।~~

मंगल [illegible] - अश्वि। रेवती। उभा। मूल। उफा। कृत्ति।
मृग। पुष्य। आश्ले। [illegible] नक्षत्र और ३।८।१३।
१। तिथि ~~होने से सिद्धि योग होता है~~।

बुध [illegible] - अनुराधा। श्रवण। ज्येष्ठा। पूफा। हस्त। कृत्ति।
रोहि। मृग। पूभा। उभा। नक्षत्र और २।७।१२ तिथि।

गुरु - पुष्य। अश्वि। पुन। पूषा। उफा। धनिष्ठा।
रेव। स्वा। विशाखा। अनु। और ५।१०।११।१५ तिथि

शुक्र - रे। अश्वि। उभा। अनु। मृग। श्रवण। धनि। पूफा।
हस्त। पुन नक्षत्र और १।६।११।१३ तिथि

शनि - रोहि। श्रवण। धनिष्ठा। अश्वि। स्वाति। पुष्य। अनुराधा।
मघा। शतभि। और ४।९।१४ तिथि हो तो त्रिकालसिद्धि
योग बनते हैं।

अमृत। सिद्धि योग - रवि हस्त। सोम मृगशिरा। मंगल अ-
श्विनी। बुध अनुराधा। गुरु पुष्य। शुक्र रेवती।
शनि रोहिणी के योग में बनते हैं। परन्तु [illegible] ७ अमृत
सिद्धि योग क्रमसे ५।६।७।८।९।१०।११ तिथि को
आते हों तो वर्जनीय हैं।

(पृ० १२ के आरंभ में जोड़ना)

मुहूर्त में योग आदि योगों का भी अवश्य विचार करना चाहिये और १-२ शुभ योग मिलने पर मुहूर्त अवश्य करने योग्य हो जाता है।

शुभ योगों में रवियोग, कुमारयोग, राजयोग, त्रिकसिद्धियोग, अमृतसिद्धियोग इत्यादि जितने ज्यादा मिले उतना अच्छा है।

रवियोग- ४-६-९-१०-१३-२० ये श्रेष्ठ हैं सब दोषों को दूर करते हैं। कहा है-

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते। चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः॥

कुमारयोग - अश्विनी। रोहिणी। पुनर्वसु। मघा। हस्त। विशाखा। मूल। श्रवण। पूर्वभाद्रपद। इनमेंसे [illegible] कोई नक्षत्र, सोम। मंगल। बुध। शुक्र इनमें से कोई वार, और १।६।११।५।१० इनमें से कोई तिथि होती है तब कुमार होता है।

राजयोग - भरणी। मृगसिर। पुष्य। पूर्वाफाल्गुनी। चित्रा। अनुराधा। पूर्वाषाढा। धनिष्ठा। उत्तरभाद्रपद इनमें से कोई नक्षत्र, रवि। मंगल। बुध। शुक्र इनमेंसे कोई वार और २।७।१२।३।१५ इनमें कोई तिथि होने पर राजयोग होता है।

त्रिकसिद्धियोग - तिथि वार नक्षत्र के मेल से

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्मादत्र गृहं हि वास्तु भवनं प्रशस्तं [illegible]
लिई [illegible] अधिकस्य माले [illegible] [illegible]
ज्योतिषशास्त्र में वास्तु के आरम्भ में (१) वृष, सिंह,
वृश्चिक और कुंभ इन स्थिर लग्नों को शुभ
माना है। मिथुन, कन्या, धनु, मीन इन
द्विस्वभाव लग्नों को मध्यम और मेष,
कर्क, तुला, मकर इन चर लग्नों को कनिष्ठ
माना है।

१ भरणी का [illegible] पहले किया [illegible]
२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] आते हैं ११ स्वाति, [illegible]
३ [illegible] [illegible] ४ [illegible]
५ पुनर्वसु [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible]
८ [illegible] [illegible] ९ [illegible] [illegible]
१० [illegible] [illegible] ११ [illegible] [illegible]
[illegible] १२ [illegible] [illegible]
१३ [illegible] [illegible] और १४ [illegible]
इनमें १-२-६ और १३-[illegible]-१४ इन नक्षत्रों को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और
क्षौर, शोभ सभी नक्षत्रों पर [illegible] नक्षत्र, दैर्घ्य
तत्व, और अच्छा मुहूर्त चौघड़िया देखकर
कार्य आरम्भ किया जाता है। खात मुहूर्त
[illegible] खात मुहूर्त मार्गशीर्ष [illegible]
[illegible] वृषभ वास्तु (२०) [illegible] (२१)
[illegible] आदि देखकर [illegible]
और (२१) नक्षत्र (२२)
[illegible] किया जाता है।
खात मुहूर्त में शेष नाग देखना जरूरी होता है।
नौका नक्षत्र, शिल्पशास्त्र तथा ज्योतिषशास्त्र
के मत से [illegible] है। शिल्प
शास्त्र के [illegible] कथनानुसार नाग
वास्तु [illegible] [illegible] है —
[illegible] [illegible] पूर्वादि [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
अर्थ: - नाग वास्तु [illegible] पूर्वादि में [illegible]
है। [illegible] [illegible] वास्तु [illegible]
[illegible] [illegible] होता है [illegible]
का आदि [illegible] होते हैं। [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भद्रा - (१)

करणों में भद्रा ही एक ऐसा करण है जो शुभ कार्य में त्याज्य है और इसके लिये ज्योतिषियों को सावधान रहना पड़ता है। फिर भी ज्योतिषियों में भद्रा विषयक अज्ञान कम नहीं है। जहाँ कहीं पंचांग में भद्रा लिखा देखा और ज्योतिषी लोग [illegible], वह दिन कैसा भी [illegible] हो परन्तु भद्रा के आने से त्याज्य हो जाता है। ज्योतिषियों की भद्रा विषयक भ्रामकता दूर करने के लिये हम भद्रा के संबन्ध में यहां कुछ लिखते हैं।

३।८।१४।१५ इन तिथियों के पूर्वार्ध में और ४।८।१०।११ के उत्तरार्ध में भद्रा आया करती है। इन ही तिथियों में [illegible] कृष्ण पक्ष की और [illegible] शुक्ल पक्ष तिथियों की [illegible] होती है।

करण का मान तिथि मान से आधा होता है इस कारण तिथि के पूर्वार्ध में आने वाली दिवा भद्रा और उत्तरार्ध में आने वाली रात्रि भद्रा कहलाती है। दिवा भद्रा दिन में और रात्रि भद्रा रात्रि में होती है। दिवा [illegible] [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर्ग हो तो आयुष्मान देते करती है।

रत्नमाला में कहा है—

सप्तु १४ वसु ८ भूति ७ तिथि १५ युग ४ दश १०,
क्षिति ११ स्तुता द्वादशाक्ष्य तिथिषु पूर्णदृशा।
आयाति लिखि रेखा
कुले भुक्ता पुरस्ता भुक्ता ॥७॥

भद्रा का मुख

मांगलिक कार्यों में भद्रा के मुख का त्याग करना चाहिये। भद्रा मुख भिन्न भिन्न समय में भिन्न भिन्न दिशाओं में रहता है।

पश्चिम, आग्नेय, उत्तर, नैऋत्य, ईशान, दक्षिण, वायव्य, और पूर्व इन दिशाओं में क्रमशः प्रहरों में भद्रा का मुख रहता है। [illegible] इस लिये जिस समय जिस दिशा में भद्रा का मुख रहा हो उस समय उस दिशा के सम्मुख प्रयाण, प्रवेश, धारणा आदि नहीं करने चाहिये।

इसलिये आगे रत्नमाला में लिखा है—

For Private And Personal Use Only

(तिथि का परिशिष्ट पृ० २१)

तिथियों में [illegible] दोनों पक्ष की ४-६-८-९-
१२-१४ तिथियाँ त्यागने योग्य हैं क्योंकि
ये पक्षरंध्र तिथियाँ हैं, जहाँ तक दूसरी तिथि-
मिल सके आप इन को न लेना चाहिए है;
पर दूसरी तिथि में दूसरी बातें अनुकूल न
आती हों और इन में से किसी तिथि में [illegible]
[illegible] तथा चन्द्रबल मिलता हो तो
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
इति [illegible] [illegible]
~~[illegible] ४ वसु ८ [illegible]~~
[illegible] नाड्यः शुभाः ॥
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~

(वार का परिशिष्ट पृ० २२)

वारों में रवि ~~और~~ मंगल त्याज्य हैं परन्तु यदि
दूसरे सभी शुभयोग मिलते हों, सिर्फ ~~[illegible]~~
वार के कारण ही मुहूर्त रुकता हो तो सोमा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१२८) तत्काल...

वार की होरा से बार शक्ति को भी
मुहूर्त निकाला जा सकता है

आदित्य वार के दिन पहली होरा आदित्य की
रहेगा, शुक्र, बुध, सोम, शनि, गुरु, मंगल
~~आदित्य, शुक्र, बुध, सोम, शनि~~, और फिर
आदित्य, शुक्र इत्यादि क्रम से २४ होरा को
रात और दिन कर २४ होरायें होती हैं। जो
[illegible] होरा [illegible] है [illegible]
विद्यमान सफल
होता है इसलिए ग्रन्थ में लिखा है — यस्य ग्रहस्य वारे यत्
किंचित्कर्म प्रकीर्तितम्। तत्तस्य कालहोरायां सर्वमेव
विधीयते ॥४॥ यस्मिन् वारे च यत्कर्म गदितं प्रकीर्तितम्
तत्सर्वं वारे होरायां सातिरेकफलप्रदम् ॥५॥

वार वालों को कुछ जान लेना भी
[illegible] होगा।
रात आदि ७ वारों में अशुभ मुहूर्त हैं [illegible]
[illegible] गये हैं —
रवि—६, ७ । ८ । १० । १४ । सोम—४ । ६ । ८ । ९ । १२ । १३ । १४ ।
मंगल—२ । ३ । ४ । ६ । १० । । बुध—२ । ४ । ८ । ९ । १० । १४ ।
गुरु—२ । ६ । १२ । १४ । १५ । १६ । । शुक्र—४ । ५ । ६ । ९ । १० । १२ । १३ ।
शनि—१ । २ । ८ । १० । ११ । १२ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ — ~~[illegible]~~ शिल्पशास्त्रमें चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ ये ७ मास गृहारम्भमें ~~[illegible]~~ वर्जित हैं। ~~[illegible]~~ आजकल पापमास का आरम्भ ~~[illegible]~~ में ~~[illegible]~~ भाद्रपद मास भी ले लेते हैं।

२ — वास्तु के प्रारम्भमें मिथुन, कन्या, धनु और मीन ये ४ संक्रांतियाँ सर्वथा वर्जित हैं। शेष ८ में से कर्क, सिंह, मकर और कुम्भ इन ४ ~~[illegible]~~ राशियों के सूर्यमें पूर्व ~~[illegible]~~ पश्चिम मुखका वास्तु बनाने का विधान किया है, तथा मेष, वृष, तुला, वृश्चिक इन ४ संक्रांतियोंमें उत्तर दक्षिण द्वारके बदले मकान मंदिर बनानेका आदेश है। इससे विपरीत द्वारवाले मकान बनानेमें शोक, धननाश आदि दोषों की प्राप्ति होती है। इस सम्बन्धमें राजवल्लभ मण्डनने ऐसा लिखा है —

आदित्ये हरिकर्किनक्रघटगे पूर्वापरास्यं गृहं,
[illegible] तुले मेषवृषे याम्योत्तरास्यं तथा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वारं भिन्नतया करोति कुमारी रोगोद्भवानाशकृदा,
कन्या मीन धनुर्गते मिथुनगो वा सिंह कार्यं गृहम्॥"
3 - कन्या तुला वृश्चिक राशि के सूर्य में वत्स निवास
पूर्व में होता है। धनु, मकर, कुंभ इन राशियों का
सूर्य दक्षिण में वत्स रहता है। मीन
मेष वृष इन राशि के सूर्य के समय वत्स
पश्चिम में रहता है और मिथुन कर्क सिंह
इन तीन संक्रान्तियों में वत्स निवास उत्तर में
रहता है। जिस समय जिस दिशा में वत्स
का निवास हो उस समय उस दिशा
के सम्मुख मकान का द्वार
नहीं निकालना चाहिये। यह सामान्य
नियम है, परन्तु इसमें अपवाद भी है
कि वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ इन स्थिर
राशियों में से किसी भी राशि में सूर्य हो उस
समय सब दिशाओं में द्वार चढा सकते
हैं"। राज वल्लभ में लिखा है -
कन्यादित्रिक पूर्वतो मकरतो याम्ये न चापादितो,
द्वारं पश्चिमतः त्रिके उत्तरतः सौम्यं तथो मुनामतः॥

For Private And Personal Use Only

(योग)

काल योग में विवाह करने से पति पत्नी में अप्रीतिभाव रहता है। गायों का मैत्री भोजनसों परावर्तित होता है।

सिद्धि योग में सभी कार्यों का सिद्धि होता है।

विनाश-पंगु-अंध-हलवन्ध्ययोग—

वार—	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	योग
	विशाखा	पूर्वा	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उफा	विनाश
नक्षत्र	अनुराधा	उषा	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	पंगु
	ज्येष्ठा	अभिजित	पूषा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	अंध
	मूल	श्रव	उभा	कृत्तिका	पुन	पूफा	स्वाति	हलवन्ध्य

फल—विनाश योग में वस्तु का नाश होता है। दूसरे पंगुयोग में यात्रा सिद्ध नहीं होती। अंधयोग में आरब्ध यात्रा निष्फल होता है। हलवन्ध्ययोग में आरब्ध कार्य सिद्धि अवश्य होता है। विनाशयोग में वस्तु का उच्छेद हो सकता है। लिखा है—

पंगो नरं निरासो [illegible] सिद्धे [illegible]॥

अन्धे दु [illegible] हलवन्ध्ये [illegible]॥

अयन (अयन)

मंगलकार्य में यद्यपि उत्तरायण में करने का ज्योतिष शास्त्र का विधान है विशेष कर गृहारंभ और गृहप्रवेश उत्तरायण में करने का विधान है। दूसरा प्रकार से दक्षिणायन में भी शिलारोपण शिलान्यास गृहारंभ है सर्वशुभ कार्यों में लिये गये हैं इस बात का अयन के संबंध में खास आग्रह नहीं है।

पक्ष (पक्ष)

शुभ कार्यों में शुक्ल पक्ष लेने का सामान्य विधान है तथापि इस विषय में खास आग्रह नहीं है। सुदि ६ से वदि ५ तक के १५ दिनों को ज्योतिष में शुक्ल पक्ष माना गया है तथापि चंद्रोदय होने के कारण सुदि ६ के पहले भी शुभ कार्य किये जा सकते हैं। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में ५ के बाद भी ८ तथा १० मी तक शुभ कार्य किये जा सकते हैं। इस विषय में ज्योतिष शास्त्र का लेख है —

कृष्णपक्षेऽष्टमी दिनान्तं तारका बलं योज्यम्।

[illegible] यावत्॥१॥

[illegible] हो तो उस का नाम 'छाल' [illegible]
होगा। जिस का नाम [illegible] २ होता
हमारा मुख्य उद्देश्य है कि स्त्रीयों के
निर्माण में [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
हैं ऐसे ही [illegible] बनते हैं
पर न आप [illegible] कि [illegible] के अंदर-
के नाते [illegible] इस का पता।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं होता कि जिस देवालय को बना रहा है उस का नाम क्या है।

॥ नामानि जातयस्तेषां मूर्धाकारानुसारतः ॥

इस नियमानुसार प्रासादों के नाम और जातियाँ उन के शिखरों के आकार के अनुसार उत्पन्न होता है। एक प्रासाद का तल दूसरे प्रासाद के तल के समान हो सकता है, परन्तु एक प्रासाद का शिखर दूसरे प्रासाद के शिखर के तुल्य नहीं हो सकता। यही कारण है कि ८ तल पर २५ प्रासाद होते हैं, पर उन में से प्रत्येक का शिखर जुदा पड़ता है।

केसरी प्रमुख २५ प्रासादों का परिचय –

इस केसरी के तल के आठ भाग होते हैं २-२ भाग के कोण और ४ भाग का भद्र। इस के कोणों पर [illegible] मूल शिखर रहे? इस प्रकार के आठाई तल पर [illegible] होने से इसे 'केसरी' यह नाम प्राप्त होता है। इसके अंग [illegible] आकृति होता है। [illegible]

इस प्रासाद का तल [illegible] भागों में विभक्त होता है

For Private And Personal Use Only

५ किसी ग्रन्थ में सर्वतोभद्र प्रासाद अगाढ तान का
भी लिखा है।
२-२ भाग के २ कोण, १॥-१॥ भाग के ...

इसके [redacted]

और २ भाग चढ़ते हैं, तथा [redacted] भद्र प्रतिरथ
यह नवीन क प्रासाद है। औरस [redacted] कोण पर
१-१ [redacted] और कोणी पर २-२
प्रतिरथ पर १-१ तिलक लगाते हैं औ

४ नन्दिशाल -

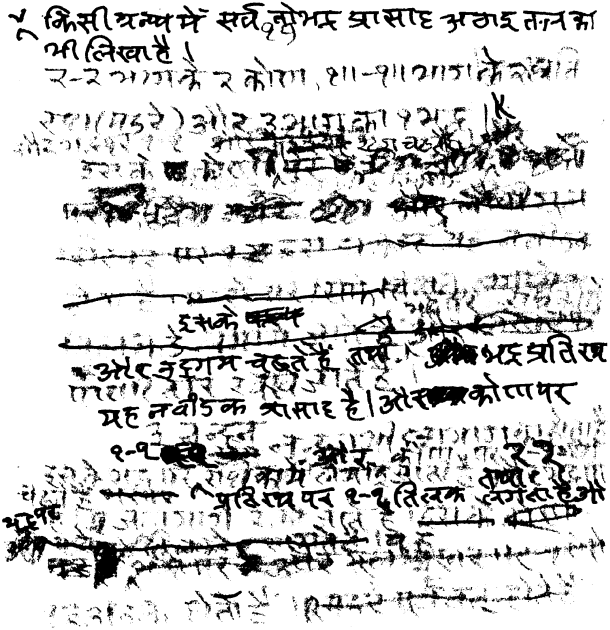

के स्थान तिलक लगाने और प्रतिरथ पर १-१ उरुशृंग
लगाने से १७ अण्डक वाला नन्दिशाल प्रासाद बनता है

नन्दी इस आसादम्भ ही दस आठ तनता है।
~~[illegible]~~
इसके कोठोंपर २-२, पडदोंपर १-१ मदों
पर १-१ [illegible] रखिका और १-१ बुनयाद लगाते हैं। यह २१ ओड़ का आसाद है।

६ भैहर

भैहर कोतवा केस आठ ताज का होता है।
[illegible] २-२ [illegible] और २ [illegible]
इसके कोठोंपर २-२ मदोंपर २-२ और पड़दों पर [illegible] तप्पा १-१ तिलक लगाते हैं।

७ श्रीवत्स

इस आसाद का तना १२ ताज का होता है।
कोठा २-२ पडदे २-२ मदों [illegible]
१-१ और [illegible] ४ ताजा होता है।
इसके कोठोंपर [illegible] पड़दोंपर १-१ मदों
पर [illegible] रखिका तप्पा [illegible] लगाते हैं। पड़दों के
[illegible] २-२ [illegible] कोठोंपर [illegible]
[illegible] यह २९ ओड़ का आसाद है।

८ अमृतोद्भव

१-१ इंच ४ बढ़ाने
श्री ... कानों कोना पर ~~...~~
अर्थात् जैसे और अतिरिक्त १-१ इंच १-१
२-२ इंच ... बने।
^ तिलक लगाने से
... आकार ... आभास होता
जाता था।

९ हिमवान् –

हटाने
अग्रवृक्ष के ऊपर का १-१ इंच ~~...~~
और ... २-२ इंच बढ़ा [illegible] पर
नहीं उपर्युक्त ... हिमवान् ...
... [illegible] गा।

१० हेमकूट

हिमवान् के ऊपर १-१ इंच बढ़ाने
से ... हेमकूट बन जाता है।

११ कैलाश

हेमकूट के कोना [illegible] पर, ~~...~~
... और उसको ... पर १-१
इंच लगाने से 'कैलाश' आकार तैयार
होता है जो ५४ अंगुल का है।

१२ श्रीकूट जय

कैलासों के कोणों के तिलक के स्थान पर, रंग लगाने से कैलास ही ४५ अंडक वाला रुचित जय प्रासाद कहलायेगा।

१३ इन्द्रनील

इन्द्रनील का तल १६ भाग का होता है १६ भागों को चौड़ाई की ही तरह कोण, पड़दे, नन्दियाँ और मध्य सोचते हैं। शेष २ भाग कोण-पड़दे के बीच में उत्पन्न एक भाग की जो रहा होगी उसे का निकालना और शेष अंगों का निर्गम और आगमन करना।

इसके कोणपर २-२, पड़दों पर २-२, मध्य पर ३-३ रंग चढेंगे, प्रत्येक नन्दी पर तिलक लगेगा और पड़दों को सभी पर २-२ अंग लगेंगे सब इसमें कुल ५२ अंडक उत्पन्न होंगे।

१४ महानील -

इन्द्र नील के कोण पर दूसरे रंग के [illegible]
टुकड़ों में तिलक लगाने और मध्य [illegible]
[illegible] पर [illegible] रंग लगाने से इन्द्रनील
[illegible] हासिल हो जायगा।

१५ [illegible]

महाकाल के कोण पर तिलक के [illegible]
[illegible] रंग लगाने से नये प्रकार का
[illegible] प्रासाद बनेगा।

१६ रत्नकूट

रत्नकूट प्रासाद [illegible] के तैयार
बनता है। इसको [illegible] के [illegible] हो
[illegible] [illegible] [illegible] विभाग [illegible]
[illegible] १६ [illegible] के [illegible] की तरह होता है
इसके कोणों पर २-२ रंग और [illegible]
कोणों [illegible] पर २-२ तिलक, पहले [illegible]
तरह [illegible] के जोड़े, [illegible]
३-३ रंग, दूसरी तरफ पर तिलक, [illegible]
[illegible] पर १-१ रंग [illegible]

ओमप्रकार [illegible] २-२ ँग इस प्रकार बहुरत्न-
कूट आस्वाद ९५ अंडक वाला बनता है।

१७ वैडूर्य

रत्नकूट के ऊपर फिर तीसरा चढ़ जाने से वह वैडूर्य नाम प्रदान करेगा जो ९३ अंडक ~~का ...~~ वाला है।

१८ पद्मराग

वैडूर्य के ऊपर एक ऐसा ताप देने को ~~सेमक~~आमद को नहीं कर सके, ऐसा ताप से ९३ अंडकवाला पद्मराग आस्वाद बनेगा।

१९ वज्र

पद्मराग के ऊपर फिर तीसरा ताप चढ़ाने पर वज्र नामक ९९ अंडक का आस्वाद निष्पन्न होगा।

२० मुकुटोज्ज्वल

मुकुटोज्ज्वल का आस्वाद के तत्व में लिखना। २० होते हैं। (मेरुतीर्थ-२ भाग कोष, ९११)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

२।। कोणानन्दी, २-२ अतिरथ, १।।-१।। दूसरी नन्दा, १-१ भद्र नन्दी और ½ भाग भद्र [illegible] सो के इस प्रकार से आग २० भाग को सो केंगो।

मुकुटोज्ज्वल के शिखर विभाग में २-२ ~~कोण~~ श्रृंग [illegible] तिलक, कोणों पर, कोणनन्दी पर १-१ श्रृंग तथा तिलक, रथों के समीप से लगाकर २-२ तिलक, प्रतिरथों पर [illegible] श्रृंग, दूसरी नन्दा पर १-१ श्रृंग तथा तिलक, भद्रनन्दी पर १-१ श्रृंग और भद्र पर ३-४ श्रृंग [illegible] ~~मुकुटोज्ज्वल प्रासाद~~ [illegible] मुकुटोज्ज्वल प्रासाद [illegible]

२१ ऐरावत

मुकुटोज्ज्वल के कोणों पर तीसरा श्रृंग चढाने से [illegible] ऐरावत प्रासाद बनता है।

२२ राजहंस -

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐरावत के वास्ते कोणा पर तिलक और भद्र के ऊपर १-१ रंग लगाने से वह ८९ अंक वाला ऐरावत आरासाह बनता है।

२३ गरुड

राज हंस के कोना पर तिलक तो बदले रंग लगाने से वह ९३ अंक का गरुड आरासाह बनेगा।

२४ वृषभ—

तल को २२ भाग कर २ भाग का कोना, २-२ भाग के ३ अतिरथ, २ भाग का भद्र नंदी और २ भाग का भद्रार्ध बनाना, ऐसे अर्ध कोणी में तलना के २२ भाग होंगे।

वृषभ के कोनों पर २-२, अतिरथों पर २-२, प्रत्यंगाद, रथ पर २-२, अतिरथ पर २-२, भद्र नंदी पर १-१ और भद्र पर ४-४ रंग लगाने से ६१ अंक वाला वृषभ आरासाह बनेगा।

For Private And Personal Use Only

२५

२५ मेरु-

इस प्रासादके कर्णी पर नौ सराग [illegible] चढाने से कुल १००१ अंडक वाला मेरु प्रासाद बनता है।

सौत्र के निकालने में प्रासाद के नाम की आवश्यकता पड़ता है इस वास्ते शिल्पी को [illegible] २५ प्रासादों के नक्षत्र [illegible] निश्चित राशि नाम से स्वर और प्रासाद का नाम स्थापन करना चाहिये।

([illegible] ४.८ [illegible] [illegible] [illegible]) प्रथम जो मेरु का इस से भी सुगम तरीका यह है कि आपने इष्ट वास्तु का नक्षत्र निकाल कर राशि के साथ लिखा गया वाला नीचे नक्षत्रों के साथ [illegible] नाम लिया करे। अगर आप को [illegible] वाली के [illegible] जाता है। [illegible] [illegible] अश्विनी नक्षत्र [illegible] १।१७।२५। [illegible]

[illegible] नक्षत्र २।१०।१८।२६। [illegible]

[illegible] २ [illegible] मघा ३।११।१९।२७। [illegible]

[illegible] २ [illegible] ४।१२।२०। [illegible] [illegible] ४ [illegible]

मा.१३।२१। [struck-through] व्यय ।[illegible] मू।१४।

२२। [struck-through] व्यय ६ [illegible]।२३। [illegible]

[struck-through] [illegible] और नेत्र [illegible]

२४। [struck-through] लाभ [illegible] हैं यह

[illegible] लिखित [illegible] चाहिये।

([illegible] का परिशिष्ट [illegible]

[illegible] लेना है) (पृ.५) गृहारम्भ का मुहूर्त

१ चैत्रादि १२ मासों में देवालय का प्रारंभ करने का

फल नीचे मुजब [struck-through] लिखा है -

१ चैत्रे शोक। २ वैशाखे धनप्राप्ति। ३ ज्येष्ठे मृत्यु।

४ आषाढे पशुनाश। ५ श्रावणे धनप्राप्ति। ६ भाद्रपदे

[illegible]। ७ आश्विने [illegible]। ८ कार्तिके [illegible]।

९ मार्गशीर्षे धनधान्यादि। १० पौषे धनधान्यादि।

११ माघे [illegible]। १२ फाल्गुने [illegible]।

उक्त फल का प्रतिपादक रत्न[illegible] श्लोकों को

पढ़ देखना चाहिये -

चैत्रे शोककरं [illegible],

ज्येष्ठे मृत्युकरं [illegible] श्रावणे।

[illegible] कार्तिके,

[illegible] फाल्गुने ॥४॥

(१२१) का परिशिष्ट यहां लेना)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१. [illegible]

जिस ग्रंथमें गुरु शिष्य [illegible] का [illegible]
वह [illegible] के लिये [illegible] कहा
होगा। परन्तु [illegible] [illegible] से [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] किये [illegible]
[illegible] हैं। कई विद्वानों के [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] है। [illegible] है
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible] — [illegible] —
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

२. सारस्व (... [illegible] ...)
यद्यपि [illegible] में जो [illegible] लिखा है [illegible]॥
कि [illegible] [illegible] होने से [illegible] [illegible]
आता [illegible] [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को पूर्णि अथवा अमावस के पूर्वार्ध के बाद दोष
के दिन हों तो काम में लिये जा सक
ते हैं।

शुभ शुद्धि में गुरु शुक्र के अस्त होने पर
अनशन [illegible] करना चाहिये। गुरु शुक्र
की अस्त तक अस्त हो कोई शुभ काम
नहीं होता [illegible] नहीं [illegible] उनके
[illegible] पहले के [illegible] दिन
जो अवस्था बतलाये हैं ओ [illegible]
[illegible] का समय होता है।

~~[illegible] प्रात और [illegible] अधिक मासों में [illegible]~~
~~[illegible] करना वर्जित है।~~

दो अमावस्याओं के बीच दो संक्रान्तियाँ
आती हैं तब हान (क्षय) मास ~~होता है~~ और
~~दो अमावस्याओं के बीच में~~ एक भी सं-
क्रान्ति नहीं आती तब अधिक मास
आता है। इन हान और अधिक मासों में
[illegible] इत्यादि कोई शुभ काम नहीं करना
चाहिये। संक्रान्ति (दि. २(१) में भी)
[illegible] मास [illegible] के आखिर
में संक्रान्ति [illegible] के [illegible]
करना चाहिये क्योंकि संक्रान्ति [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को पूर्ण अध्यत्ता ज्ञानकी इतनी के माह पौष [illegible] के दिन हैं तो काम में लिये जाने ते हैं।

जैसे शुद्धि में गुरु शुक्रकी अस्त लगाये आरंभ विवाह करना चाहिये। गुरु शुक्र की अस्त तक अस्त हो कोई शुभ काम नहीं होता [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] गहरे के [illegible] के [illegible] को अवलम्ब वर्जनीय है जो [illegible] को [illegible] ने [illegible] का समय होता है।

~~[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] करना वर्जित है।~~

दो अमावस्याओं के बीच में संक्रांतियाँ आती हैं तब हान (क्षय) मास होता है और ~~दो अमावस्याओं के बीच में~~ [illegible] संक्रांति [illegible] नहीं आती तब अधिक मास आता है। इन हान और अधिक मासों में [illegible] [illegible] कोई शुभ काम नहीं करना चाहिये। संक्रांति (पृ. २(१) में) [illegible] मास [illegible] के अधिकार में संक्रांति [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] करना चाहिये जैसे कि संक्रांतियों [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन (दिन शुद्धि)

दिन शुद्धि देखते समय वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और चन्द्र इन का विचार करना चाहिये। रविवार आदि सात वारों में जो वार वर्जित है उस दिन को छोड़ देना चाहिये। तिथियों में रिक्ता [illegible] कृष्ण चतुर्दशी, अमावस्या, शुक्ल प्रतिपदा, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि इत्यादि तिथियों में मुहूर्त का [illegible] नहीं करना चाहिये। यदि जल्दी से काम किया जाय और चन्द्र की अनुकूलता मिलती हो तो वृद्धि तिथि भी ली जा सकती है।

नक्षत्रों में रोहिणी नक्षत्र है कि नहीं यह देखना चाहिये। उग्र तीक्ष्ण नक्षत्रों में शुभ कार्य निषिद्ध होने से मृदु क्षिप्रादि सौम्य नक्षत्रों का उपयोग करना।

व्यतीपात, वैधृति और परिघ का आरंभ हो तो उस दिन को छोड़ देना, शेष अशुभ योग हों और शुभ योग भी हों तो अशुभ योगों की प्रारंभिक अशुभ घड़ियाँ छोड़ कर मुहूर्त किया जा सकता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ (पन्ना)

नक्षत्र समुदाय खण्ड कार कहता पन्ना।
१० तक राजकृत्य काम करनेका जतो के
श्लोक में विधान करता है—
उदिते च तथा-चन्द्रे, शुभयोगे कर्म लिखो।
कृष्णास्य द्वाशा यावत् सर्वकार्याणि साधयेत्
यद्यपि पहलेके पन्नामें कृष्णा पक्षकी अष्टमी के बाद
~~चन्द्र~~ चन्द्र उदय तक तारा बल लेकर
कार्य ~~विधान~~ करनेका व्यवस्था की है परन्तु
यह संकेत ~~....~~ चन्द्र की उदितावस्था में ~~...~~
~~....~~ कार्य करनेके लिये ही समझना
चाहिये अर्थात् जब तक चन्द्र अस्त
नहीं होता तब तक ४।६।९ इन तारों
में कार्य किया जाय तो ~~...~~ सफल हो
सकता है।१४।३० ~~...~~ ।१। को जब कि
चन्द्र अस्त रहता है कोई भी शुभ कार्य
~~........~~ तारा बल होने पर भी
नहीं करना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

वास्तुमञ्जरी प्रारम्भ:

नमस्यामि जगद्वंद्यं आमाद्यां मुक्तिदिनप्रती
अभिष्टार्थदात्रीं होदहायनी भुवनेश्वरी १
वास्तुवेदेभ्य शास्त्र समदाय विरच्यते ।
कदध्रा साहस्तपात्ती स्तबके वास्तु मंजरी २

गृहाद्यारंभणं मार्गे पोष्यश्चवाण माघवे ।
फाल्गुने च स्थिते पक्षे दिने सूर्ये सुभावहे ११
पूर्वापरास्यो गेहादि कर्के सिंहे मृगे घटे १२
तुलाजालीवृषस्थेऽर्के कुर्याद्याम्योत्तराननं
जूगम कान्याधनुर्मीन गर्तेऽर्के नैव कारयेत् १३
अन्यान्तरे वृषालीकुंभसिंहेऽर्के कुर्याद् गेहं चतुर्दिशं
गृहाद्यारंभणं नंदाजया पूर्णा शुभा तिथी १४
भौमार्की वर्जिता वारा योगा शोभना नायका
उत्तरा त्रितयं पुष्यो हस्ता मैत्रादयो नी १५
तृतीया पंचमी चैव सप्तमी नवमी तिथि:
एकादशी त्रयोदश्यो वास्तुकर्मसु शोभना १६
तुलादि सप्तमी यावत् पूर्वास्यं वर्जयेद् गृहं
भरास्यं न कर्तव्यं नवम्यादि चतुर्दशी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमावस्याष्टमी यावत् पश्चिमासी विवर्जयेत्
नवम्या द्वे त्वघामासी यावत् शुक्लचतुर्दशी।
यदा गृहं च कुर्वीत तदा संपद्यते न हि
चतुर्थ्यां वाथ षष्ठ्यां वा हस्तितास्य विवर्जयेत्।
तत्र सैवसतो यस्मान्महाव्याधिभयं भवेत्
अथ योगान् प्रवक्ष्यामि वर्जिता ये मनीषिभिः
अतिगंडो व्यतीपातः परिघो वज्र एव च।
गंडः शूलं च विष्कंभो व्याघातस्य च दुर्भीत
एतान् योगान् समावर्ज्य शुभावे तेषु वेव हि
त्रिंशते घटिकास्तिस्रः पंच वा वर्जयेत् सुधीः।
वज्रे तु घटिकास्तिस्रो नव वा परिवर्जयेत्।
अतिगंडेषु वै षट्कं नव वा द्वेषघटिका।
गंडेषु घटिका षट्कं व्याघाते नव षड् गता।
शूले तु घटिका पंच सप्त वा द्वेषघटिका
वैधृतौ च व्यतीपाते घटिका षष्टिरेव च
परिघे घटिका त्रिंशत् षट्त्रिंशद् वापि शुभा। एषु
एतेषां घटिका दोषा सर्वास्त्वान्या शुभावहा
योगा शुभावहा कार्या वास्तुस्थापनकर्मणि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथा नाम तथा तेषां फलसिद्धिरुदाहृता
करणानेष वक्ष्यामि वा स्तारंभे शुभाय वै
तैतिलं वणिजं नागं बालवं करणानारं ।
धनधान्य कराणि स्युः श्रेयसे च सुखाय च ॥
श्वेते मैत्र न महिंद्र गंधर्वा ज भीज रोहितो ।
तथा वे राज सवित्रे मुहूर्ते गृहमारंभेत्
अथवा रवासे प्रणवर्जनीयात् पुष्पि मात्रे
अर्थम लोकों त्रु वे वज्ये चंद्रे वे ब्रह्म राक्षसाः
मैत्राग्नेयो कुजे नेष्टो बुधे चैवाभिजित्तथा
पुत्रयामो तथा शुक्रे राक्षसाद्यो बृहस्पते
सौजंगमो मुहूर्ते वर्जनीयो सनीश्वरे ॥
अथ नक्षत्र उत्तरा तृतीया पुष्यो हस्ता मैत्रा हपी
त्वष्टं । ब्रह्म सौम्या स्वनी पोष्णां वासवं पञ्चभं शुभं
अथ वृषचक्र - सूर्यभात्रिचतुर्वेद रसवेद कृपाब्धि ३।
द्ये चाग्नि भयं शून्यं स्थैर्यं श्रीरा धनु त्वयं
वित्तं धनं शून्यं विद्यात् गृहादीनां निवेशने ॥
लग्ने स्वंगे स्थिरे सौम्ये युते दृष्टे च कर्मगैः ॥ १८
बलिभिस्तैर्गृहारंभो यदा द्विनवकेन्द्रगे ।
पापे त्र्यायगे शस्तोऽष्टम क्रूरस्तु मृत्यवे ॥१९॥
तमोर्क शनि कुजाः पापाः हीतेन्दु ज्ञापरे शुभाः ।
जीवेन्दुर्के सिता नेष्टा निबला नीचगामिनः २०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लग्ने गुरौ द्वे यामित्रे शुक्रेऽब्धौ सहजे कुजे।
षष्ठे(ष्टे) के रचितं वेश्म स्थिरं स्यात्स्थिरहस्तः २१
गुरौ केन्द्रे भृगौ केन्द्रे स्वेइे चायगते रवौ।
शतान्धकुर्गृहमष्टौ मृतौ शुक्रे कुजे रिपौ २२
सहजेऽर्के सुते जीवे द्विशताब्दा सु(कु)रालयः
लाभे कुजार्क चन्द्रस्य स्वजीवस्त्वर्षे यत्र भवेत् २३
प्रारंभकाले गेहस्याशीति वर्षाणि तत्र स्थिरम्।
कर्कलग्नस्थिते चन्द्रे केन्द्रे जीवे गृहे श्रिये २४
स्वोच्चस्थे गृहे मित्रे वेशस्थे च हरिदत्ता।
मेषो वृषोऽथ मकरः कन्या कर्को झषस्तुला। २५
सूर्यादीनां क्रमाद्द्वैर्मुच्या नीचैस्तु सप्तमं॥
एकोऽपि चेत्परं शस्तः सप्तमे दशमे ग्रहः॥२६
तद्गृहं वर्षमध्ये भवती नीयते परैः
भृगुर्मीनगतो लग्ने जीवः कर्के च तुर्यगः।
शनिस्तुलायामायस्थस्तदा श्रीमद्गृहं चिरं
सिंहस्थिते सुराचार्ये धनुर्मीनगते रवौ।
मासे धिके व्यतीपाते गंडान्तो वैधृतौ त्यजेत्
हातोन्दे गुरुशुक्रेऽस्ते हग्घे धिष्ण्येऽथवा तिथौ।
शकुनेषु विरुद्धेषु गृहारंभं त्यजेत्॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ लग्नं प्रवक्ष्यामि गृहारंभे शुभावहम्।
वृषो धनुस्तुला कन्या मिथुनं कलशस्तथा॥
लग्नान्येतानि शस्तानि गृहप्रासादकर्मेति
सिंह वृश्चिक कुंभोच्च लग्नान्याहुः स्थिराणि हि।
प्रासादप्रतिमालिंग जगती पीठ मण्डपाः।
प्रतिमा नगरारामा निवेशा सलिलाशयाः
गृहादिकर्म कर्तव्यं स्थिरलग्ने सुशोभनं
एकादशे तृतीये च षष्ठे पापाः शुभा ग्रहाः।
पापग्रहेष्टमे चैव मरणं प्राप्यते ध्रुवम्॥
सिंहमीनालिराशीनां नृणां पूर्वमुखं गृहम्।
ककंन्यामृगं शानं दक्षिणास्यं प्रकारयेत्।
चापजुग्मतुलेशानं पश्चिमास्यं मुखं गृहं।
वृषमेषघटेशानं गृहं स्यादुत्तराननम्॥
गृहदेवालयोद्यानलिंगतोयाशयादिषु।
प्रारंभे पूर्णतायां च श्रेयसे वास्तुपूजनम्॥
प्रासादेस्वत तेनार्च्चा गृहे षोडंती राक्षसः।
चतुःषष्ठ्यापदैर्दुर्गे पुरे राजगृहेऽर्चयेत्॥
एकाशीत्या तु हर्म्येषु शतेन सुरवेश्म सु
लिखेद्धेमायतं वास्तु हेमरत्नाक्षतादिभिः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अग्रे वास्तुविन्यास ४-५(१)।

हस्तलक्षणादिपरिभाषा ५(२)

आयादि-आय-व्यय-अंशक-तारा-राशि-
अधिपति-आदि ६

कन्यादित्रि त्रिभे कें स्याद्वास्यो पूर्वादिके शिरः।
मूर्धादिगेषु न खनेत् प्राक्कुक्षौ खननं शुभं॥

ग्रंथान्तरे-भाद्रादित्रित्रिमासेषु सर्पस्याहेः पूर्वतो मुखं।
खातं वायुमहेशाग्निनैर्ऋतेषु शुभं क्रमात्।

नानुमात्रां खनेद् भूमीमथवा कूपोन्मितां-प्रतिष्ठा-
सार समुच्चये। ऊर्ध्वं पुरुषमात्रात्तु न शल्यं दोषदं गृहे।
प्रत्यान्तिकं स्थितं शल्यं प्रासादे दोषदं नृणाम्।
तस्मात् प्रासादिकां भूमीं खनेद्यावज्जलान्तकं।
पाषाणान्तं कर्करान्तं वा ततो वास्तुं पूजयेत्॥
खाते पूर्वे गृहाद्यैया शिलास्थंभांश्च विन्यसेत्।
स्तंभस्थापन मंत्रोऽयं प्रणवादिनमोन्तकः ४
ॐ यथाचलो गिरि मेरुः हिमवांश्च यथाचलः
यथाचलो नरेन्द्रस्य तथा त्वमचलो भवनमः

स्थापन विधि ७-८

दुर्गादिलक्षणं ८

अथ जलाशयाः ९

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

~~[illegible]~~ मृगशिरा,
पुनर्वसु, पुष्य इन तीन में से कोई एक
पूर्व वाहिक
नक्षत्र लेना चाहिये, क्यों कि देवालयों
में यथा नाम देवता का नक्षत्र ही लिया
जाता है। देवालय पश्चिम मुख का हो तो
श्रवण या अनुराधा में से एक लेना चाहिये
आषाढ उत्तर मुख का हो तो अश्विनी या
रेवती में से एक ~~[illegible]~~
कृत्तिका त्रि मुख देवल जाय नहीं बनाना होता
तो फिर भी कहाँ से उस नक्षत्र ले जाय तो
हस्त तथा स्वाति इनमें से कोई लिया जा
सकता है। राजा तथा सामान्य
हर एक मनुष्य का मकान बनाते समय
शिल्पी को नक्षत्र गणना करके गृहस्वा-
मी के साथ उसका मेल मिले वह
नक्षत्र कायम करना चाहिये। परन्तु राजा
के अतिरिक्त अन्य मनुष्यों के गृह का
नक्षत्र देखते समय घर के मुख
का अनुमान ही की दिशा के नक्षत्र
नहीं लेना चाहिये, अन्य स्थान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेके बाद इसका असर कम हो जाता है।

आय निकालने की रीति-

आय निकालने की रीति बिल्कुल सुगम है। अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों में से ~~[illegible]~~ जिस संख्या का नक्षत्र हो उस संख्या को ८ का भाग देने पर जो शेष रहे वही आय की संख्या जाननी चाहिये, जहां नक्षत्रांक को ८ का भाग न लगे वहां नक्षत्रांक ही आय जानना चाहिये। आय निकालने की रीति स्वरूप निम्न श्लोक नीचे दिया जाता है -

नक्षत्रं वसुभिर्भक्तं, शेषं तत्त्वं प्रभेद।
एकैकस्माय सम्माने व्यवस्था विधिज्ञत्त्वतः

२ नक्षत्र -

जिस (देवालय) मंदिर के ~~[illegible]~~ का मुख्य द्वार [illegible] दिशा का [illegible] जिस में ~~[illegible]~~

For Private And Personal Use Only

आयों की ही तरह व्यय भी आठ माने
गये हैं। [illegible] इनके नाम १ ज्ञान, २ दर्शन,
३ [illegible], ४ आनन्द ५ प्रमोद ६ [illegible],
७ [illegible] ८ निहालता है। इनमें आठों
ओं [illegible] व्यय आय से कम हों तो ठीक
अच्छा है। १-२ आय में १ व्यय, ३ में २ का
४ में ३ का, ५ में ४ का, ६ में ५ का ७ में
६ का और ८ वें आय में ७ का [illegible] व्यय
हो तो अच्छा है। तात्पर्य यह है कि आय
से व्यय कम होना चाहिये। इस नियम
[illegible] ८ वां निहालता [illegible]
[illegible] नहीं ठहरता परन्तु यह नियम
[illegible] नहीं [illegible] चाहि-
ये, [illegible] [illegible]
[illegible] हो जाय
[illegible] क्योंकि ५ का [illegible] में व्यय ८
का हो जाता है। [illegible]
है कोई भी [illegible] हो [illegible]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

चापराहे इह कोचिर्य्याचयमथो कृत्वे ह्याजां हितो,
नाशिष्टो धनमो सजनम भवतोऽयते वाद्यगे हे स्वर ।
वाहित्रे स्वर जाति नाम लिङ्गे सौष्ठे गजो गृहे,
कर्णो श्री रहना हवे न यायते ग्रासेन मृते हा सेवागा ॥
श्लोक: [illegible] नास्त्रिर्भि स्ति कर रोमो स्वराणाम् ॥

एक आय के स्थान दूसरा आय देने का बात.
वृषभाय के स्थान सिंहाय, गजाय,
[illegible] ध्वजाय, ~~ध्वांक्ष से भी [illegible]~~
~~[illegible] सकता है~~ । गजाय के स्थान [illegible]
सिंहाय, [illegible] ध्वजाय, और ~~दिया जा सकता है~~
सिंहाय के स्थान ध्वजाय दिया जा ।
सकता है । वृषभाय अपने स्थान के सि-
वा कहां नहीं देना चाहिये । यही बात
राजवल्लभकार ने नीचे के शब्दों में कहा है-
श्लोक: सिंह गज ध्वज आदि वृषभे सिंहध्वजौ कुञ्जरे,
सिंहे वै ध्वजमाप्तेन वृषभो ऽन्यत्रापि देयो नहि ॥
२ व्यय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भो इत्यादि में व्रसभाव हितकारी है।

७ वादिकशाला, वाष्प और खरजीविये (जिनकी आजीविका के साधन गाहे हैं) इन लोगो के घरो में खराब हेना।

९ रेरको के घर, याने [illegible] आदि) को आर (इत्यादि कर) बोहरा (इत्या आदि) तलीग, हस्तिशाला इत्यादि में गारक हेना हितकारी है।

८ क्षीरसागर, तापसोंका मठ, इत्यादि मे कामकाज (कर्मशाला) हेना आदि मे यहां हमारे [illegible] कहे इत श्लोकोंमें कहा है जैसे—

छने हेवन्र हे क्षिजस गवाके [illegible] है अर्थात जले, वे स्वारेक्षु [illegible] पृ रा स्ते हजअ: [illegible] आदि [illegible] रहे गुरे न हो गेवरहे लिंद [illegible] विनके लिहारी हारावें ॥ ५॥

For Private And Personal Use Only

बादसाह तख्त, आकाश का, कंगाल, पलंग,
वस्त्र, अलंकार, पात्र, सिंहासन, गोल,
बेहरा, कुंड, कुंआ, तालाब, बजार,
ग्राम आदि में नीतादि और महलादि
निकाल कर ~~[illegible]~~
आय देखना चाहिये।

कहीं पर कौनसा आय देखना चाहिये

१ देव, देव मंदिर, आकाश का घर, नदि
का जलाशय, नहर, भूखला, गाड़ीवान,
के बगादि में ध्वजाय देखना है।

२ आदिसे आजीविका व लोगों लावें (खेती)
ढेर, होम कुण्ड, इत्यादि में धूम्राय देखना है।

३ सिंहद्वार, राजमहल, शस्त्रागार,
सिंहासन इत्यादि में सिंहाय देखना

४ चाण्डालों के घरों में श्वानाय देखना

५ वैश्यों के घर, कुडसाल, ~~[illegible]~~
व्यापार घर (दुकान) खजाना, भोजनशाला

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इनमें से ध्वज, सिंह, वृषभ और गज ये
विषम आय शुभ माने गये हैं। [illegible]
आय जानने के श्लोक कहते हैं —
ध्वजो धूम्रो हरिः श्वा गौः खरो हस्ती ध्वांक्षक
इत्यादि [illegible]
आय [illegible] की रीति —
जिस का आय निकालना हो उस स्थान
की लंबाई को [illegible] चौड़ाई के साथ गुणा
[illegible] से और [illegible]
को अंगुलों को जो अंक आवे उस को ८
का भाग देना, [illegible] जो अंक बचे वह
ध्वजादि आय जानना, [illegible] १ बचे तो ध्वज
आय २ बचे तो धूम्र आय इत्यादि। [illegible]
नीचे के श्लोक में कहते हैं, जैसे —
"दैर्घ्यं विस्तारगुणितं, हरेद्भागं ततोऽष्टभिः
शेषमायं विजानीयात्, ध्वजाद्याः [illegible]
जिस तरह का जिस प्रकार आय निकाला
है उस मन्दिर, शिवलिंग, ध्वजा, पीठ इत्यादि
की ऊंचाई लंबाई आदि को आठ का भाग देकर
आय का निर्णय करना चाहिये और आय

For Private And Personal Use Only

इनमें भी आय, व्यय, नक्षत्र और अंशक ये चार राशि से देखने योग्य हैं क्योंकि देवालयों में इनकी मुख्यता है।
जैसा कि नीचे के श्लोक में कहा है —

" देवालयं गृहे बिम्ब मध्ये आयादिकं तथा ।
नक्षत्रं नाडिवेधादि स्थापकस्य [illegible] ॥ "

अर्थ — देवमंदिर में आयादि चार अंगों को तथा गण और नाडीवेधादि नव अंगों को [illegible] देव और उसके स्थापक गृहस्थ के बीच देखने चाहिये। आजकल के शिल्पी सिर्फ नक्षत्र और आय देख लेते हैं। व्यय और अंशक शायद ही कोई देखता होगा। इसी तरह देव और स्थापक के तीन राशि विगैरह कुछेक बातें देख लेते हैं। देव मंदिर में आयादि चार अंग और देव तथा पूजक के योनि, गण, राशि, मैत्री, नाडीवेध और तारा आदि इन अंगों की अनुकूलता देखते हैं।

१ आय —

१ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ खर, ७ गज, ८ काक ये ८ आय क्रमशः पूर्वादि ८ दिशाओं में बलवान होते हैं।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भद्राका पुच्छ

भद्रा के मुखका हर तरह उस का पुच्छ [redacted] भी त्याग लेना आवश्यक है। जैसे दिन [redacted] भद्रा का मुख छोड़कर दूसरे काल विभाग में शुभ कार्य कर लेने में दोष नहीं है उसी तरह रात्रिगत भद्रा का पुच्छ छोड़कर शेष समय में [redacted] शुभ कार्य करने में कोई आपत्ति नहीं है। यही नहीं बल्कि दिनगत भद्रा का पुच्छ ~~सास~~ विभाग शुभ कार्य में अवश्य ग्राह्य कहा है इस वास्ते हम भद्रा के पुच्छ विभाग की घड़ियां नीचे लिख देते हैं -

८।१० की भद्रा [redacted] की [redacted] पहले (५ घड़ियों [redacted] के बाद की ३ घड़ि[redacted] भी भद्रा के पुच्छ की हैं। ७।११ की भद्रा की १२ घड़ियों [redacted] के बाद की ३ घड़ियों में भद्रा का पुच्छ रहता है। ३।१५ की भद्रा की २१ घड़ियों [redacted] [redacted] के [redacted] अनन्तर की ३ घड़ि भद्रा के पुच्छ की हैं और ४।१४ की भद्रा के अन्त की ३ घड़ियों में भद्रा का पुच्छ समझना चाहिये।

भद्रा पुच्छ [redacted] बोधक.

८।१०	आरम्भसे ६।७।८ घड़ी पुच्छ की
७।११	आरम्भसे १४।१५।१६ भी आरंभ की
३।१५	आरम्भसे २२।२३।२४ में घड़ियों में
४।१४	अन्तिम ३ घड़ि में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रद्धा (६)

इस विषय में प्रमाण नीचे मुजब है—

श्रद्धानं पूज्यवर्गं प्रभावनादिका पक्षपातं,
हरिकृतः सद्भावो विवेक सहितो जो निश्चयात्मक।
स्वतंत्रत्वे शक्यास्ते [illegible] सद्भावे,
धूर्त विदेः पुष्टि [illegible] १४ [illegible] ॥१॥

श्रद्धा के दो स्वरूप-

श्रद्धा के सात्विक और राजसिक ऐसे दो स्वरूप बताये हैं। (द्विभागका) को [illegible] सात्विकी और राजसी श्रद्धा को राजसिकी जान कर कहा है कि सात्विकी का मुख्य [illegible] और राजसी का कुछ और ही होना चाहिये कहा है—

सात्विकी राजसी की श्रद्धा द्विधा रचौ प्रकीर्तिता।
सात्विका बहुधी तत्र राजसिका: पृथगेव च॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुब्जं भिन्नं न कर्तव्यं द्वारं तत्र सुखेच्छुभिः।
ह्रस्वे च जलनिश्रावं नैव कुर्यात् कदाचन।
निम्नोन्नतं कराली च संमुखं (सन्मुख)
पृष्ठदेशगं वा मावर्तं च न कुब्जं द्वारमयतरं च
स्तंभं द्वारं च भित्तिं च विपरीत्येन कारयेत्
कटुकंटकि दुर्गंधी गुह्यका श्रय द्रुमान्।
अंगान स्याद्धेनारी स्यात् इष्यानस्य न निवृतिः
यत्र भुक्ते यथा स्थाने पात्रधान्यं कराहिकं।
भग्नभांड गतच्छाद्यं मुख्यं वा तोपसाधतैं।
रजस्वला स्यात् दृष्टं संध्ययोर्वा विदिग्मुखं।
भग्नासन गते यद्वा आसंदी सेस्था भुज्यते ॥
यत्रोपशा[illegible]वकी चीर्ह त्रापेयमथापि वा
पर्यस्तिमेद्वा वथा पाक पाकभेद सदा कली
नाभ्युद्धाति च संध्यायां यत्र कंटकिनो द्रुमाः।
भार्या पुनर्भूवत्मीकं यत्र नीता च वल्लरी।
मुसलो लुखले क्षत्रा मा स्यात् दह दुदुंबरे।
मैत्रश्चावकरे सश्च पक्कान्न कान लेघनं।
सर्पि
क्षा(क्षा ?)लीपीद्वाने वा द्यां स्याले नाग्नी समर्पि
उच्चैर्वदेत्वा वा रात्रौ नीचज्वलती चान्ति.
पितर्ति न भी वदत्येवं पुत्रो भार्यास्तथापतीन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५३ यत्र धान्यं विप्रकीर्णं काकमुखैक भोजनं
अपावृते पर्यस्तिष्टे प्रुचीष्टे च स्यते घृतं ।
बालानां प्रेतमातानां च धान्यं च भुंजते
पाचयंत्यात्मनोऽर्थेनं वृते वै मासमन्दना
गुरुर सामन्तो यत्र कुरच प्रगे निशा
आश्रमान् विधर्मस्था प्रभीवंती परस्परं, पर-
स्वाहानरूच्चयो विपाणपभय हारीणा
अभ्यस्तु कुर्गुपासिन्हो यत्र शीन्हसमा गुरू
शास्ती प्रेत्या स्वभर्तारं गुरुणां कुरु वधू
तत्र श्वार नास्तीका पापा निर्मपादा हतं चीभ
अभ्यन्त भन्दाणो यत्री न्याचार रहिता मरा
भर्तारिपश्च भवने यत्र पसय नी मार्जनी
अमार्जिताणि भंडानीत्तत्रा लन्दमीर्भये सदा
वेदशास्त्रविहिनं यनास्तीकाक्रांतीमहीजे
गुर्तिनाभाही न्यान्याभिक्रितं संस्कारवर्जितं
स्त्रीजितं स्वामीहीनं च लिंगभी परिवारितं
श्लेष्मवैतोच्छिष्टमलै पलीत्सांगोदसारभी
केशा भस्म तुषांगार प्रेत वृते यूतं ग्रहं ॥
कपालास्थि मसाकीर्ती स्वपदे परीपुरितं ।
मार्जार नकुलादीनं संघुष्टं कलहारवे
दृश्यात्म काष्टे देवानं पदी तत्र नयं व्रजेत् ॥
तस्मात् तेषां परित्यज्य २३ च यो गृहनाहके ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसे के सामने आगर पीछे आयेगा जो बाकि है।
है वास्तु [illegible] बीज घर के सीमुख चन्द्र का लेना
होता है। [illegible] ऐसा मनुष्यों के मकान को [illegible]
लाइ चाहिये दिशा में चन्द्रमा रहना ही केवल
[illegible] करी माना जाता है।

नक्षत्र [illegible] मिलान करने की रीति -
[illegible] होत गाल (नक्षत्र को [illegible])
गुणाकार करने पर [illegible] को
[illegible] गुणाकार के ऊपर २७ का भाग देने
पर [illegible] जो होय अंक जो वहां आवेगा
[illegible] का अंक समझना चाहिये।
१ [illegible] ने [illegible] २ [illegible] ३
[illegible] वास्तु [illegible]
हाथों के [illegible] अंगुलों [illegible] हो [illegible]
[illegible] अंगुल [illegible]
[illegible] को २७ का भाग देकर [illegible]
~~[illegible]~~
~~[illegible] है [illegible]~~
[illegible] पर [illegible] यह गणित से [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस सब सिद्धांतों के लिये सूत्र भी दिये हैं अतः इस सांख्य/ज्योतिष क्षेत्र का स्वतंत्र तथा आय निकालने के लिये इस सारणी देने से सुगमतापूर्वक आय व्यय का आंकलन निकाला जा सकेगा।

४ अंशक —

अंशक ३ होते हैं १ इन्द्र, २ यम और राजा। अंशक निकालने तथा इनके विनियोग का निरूपण राजवल्लभ के [illegible] पद्य में नीचे मुजब किया है।

"वस्वग्ने व्ययहर्म्यनामसहिते ... [illegible]
... [illegible] वसुभूपादिक्रमवशादेते स्युरेन्द्रो हि ना॥
वैश्यालय यम स्युः पण्य मवने नामे तथा भैरवे,
राजांशो गजवाजिशालनगरे राज्ञां गृहे मंदिरे॥"

अर्थः — नक्षत्र का मूल राशि के, व्यय के और मकान के नामाक्षरों का अंक, इन तीनों को जोड़ कर तीन का भाग देने शेष १ रहे तो इन्द्रांश, २ शेष रहे तो यमांश और ० रहे तो राजांश समझना।

For Private And Personal Use Only

नग्नं तपस्वसंल्लानं मायाहीनि न योजयेत् ॥
गृहं न शुभदं भिन्नं माद्यभूमौ रवेः करैः ।
कर्णेऽपि कुक्षौ पृष्ठे वा संलग्नान्य निकेतनम् ।
सत्तालीदं नामभागे छिद्रं हीनांगिकं हि वा त्रीणां
तद्व तुली छीन्तानि मुखागवाध्वकम् ॥
तथा हीनाधिक स्तंभं भग्नश्रेणीद्वारं हीना ।
विकर्णं विषमच्छन्न तुली निम्नं च मध्यतः ।
उच्चजाधं हीनमध्यं हीनभित्ति मुखोन्नतं ।
मानहीनं मर्मविद्धं ससत्वं विस्तरे धिकं ॥
बहुद्वारं चान्यवास्तुच्युतद्रव्यै विनिर्मितम् ।
समीपस्थगृहं मूलगृहादूर्ध्वं तथाधिकम् ॥
शिवसूर्यगणादीनां अन्तरे यद् गृहं भवेत् ।
अछिद्ररहितं द्वित्रिचतुःशालीच यद् गृहं ।
भीतो बहुकलेपाढ्यं समसीधी त्रिरोगरू ॥
अप्रतिष्ठं पादहीनं मार्गयुग्मान्तरे स्थितम् ।
अग्नेर्गृहं नापवद्धिवा परद्रव्यैश्च निर्मितं ।
वरितं पूर्णतां नीतं स्थपतीदृईकारितं ।
वस्तुजद्रव्यैः कृतमनन्ततं ।
देवराजामात्यधूर्तेच त्वरादि समीपगम् ।
अधस्तलादूर्ध्वतलेऽधिके वानत्रं गृहं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रासादे देवराज्ञोस्या त्यजेत् प्रासादजे गृहे।
शिवसूर्यस्थितो गेहे न कुर्याज्जिनपृष्ठतः।
विष्णोर्वामे विधेर्द्दक्षे चंडिपश्चात्हरिशाम्॥
द्वौ स्तंभो द्वारमध्ये तु दद्याद् गर्भं न पीडयेत्।
वृद्धिं गृहादिवास्तूनाँमिच्छेद्यदि श्रीमद्धतीं।
प्रागुत्तरे सर्वतो वा वर्धयेन्नान्यतो गृहम्।
यदी वर्धयेद्गेहे सर्वभाव विवर्द्धयेत्।
प्राग्वर्द्धिते मित्रवैरं याम्ये रुग्भयं गृहे।
पश्चिमेऽर्थविनाशः स्यात् मनस्तापस्तुत्तरे।
आग्नेयेग्निभयं विंद्याद्द्वासे वनसमुद्भवः।
वायव्येनिलरूक्कोप (न महत्कोपः) ईशानेह्रास्यसीदयः।
द्विगुणे वेष्टि वलभी नीद्वीरणास्तु चतुर्गुणाम्
प्रासादस्योदयद्भूमी परितज्य च संगुतां।
लिंगस्याद्ध गुती त्यक्त्वा गृहं कुर्यान्न दोषदं।
मयमते। सौवर्णे च वास्तूनां वास्तुसौवर्णानि च
द्वारणां परीक्षस्य मत्यवे स्यान्न संशयः।
मयः — द्वयव्यासायामं आगेवार्थे विचिन्त कर्तव्यं
तस्माद्धीनं च तत सततं विपदं पदं भवति॥
भोजः — तापित द्वारसंरोधे महितो जायते स्मरी।
कृतानि यत्र चीर्यते गवाक्षालोकनानि च॥
तत्र प्रसूतिर्न भवेन्निष्पन्नापि विनश्यति॥

For Private And Personal Use Only

तुलसी चम्पऽशोकाश्च पटोलार्जुनमंजरी।
सिद्धार्थो हिंगुतपासान् समाधित्योपधंपुरं
धूपोऽयं श्रीप्रदो गेहे रक्षोभूतपिशाचहृत्
गृहकोरग कीटादिमाक्षिका मसकापहः॥

अथ गृहादिष्वशुभानि –

विनाप्य तुर्यायामान्य छायाप्रासादवृक्षजा।
नेष्टा गृहे स्तत्पार्श्वे द्रुमं हेममपि त्यजेत्॥
मालती दाडिमीं द्राक्षां बदरीं कदली निशाम्र।
बीजपूरी [illegible] मास्थं च चिंचेक्षुकरवीरका
नीलार्वं केतकीं श्वेतां गिरिकर्णीं च मंदिरे ।२
तत्र येऽवश्य रोहंते सर्वं तत्राऽशुभं भवेत्॥
मत्तमते। मालती केतकी रक्ता दाडमी चंपकद्रुमे।
पुंनाग बकुलाशोक पीपली पनसाम्बुजे।
मंदार पाटला पुंडरा द्राक्षा कुसममंडपे
शतपत्री नालिकेरी पुरसान्येऽत्र द्रुमे।
छायाहेय परित्यागाद् भुवनं तनुते श्रियं
गृहे सुचित्र माल्याद्येर्भैमाकारं विभीषणं
कपोतोलूकगृध्रादि सिंहस्येन कपी त्यजेत्॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४७

अथ नेत्रमान लक्षणं ९(२)

धारागृह ''

गृह परिमाण ''

एक द्वारादि गृहाणि १० - २०

अथ गवाक्षा २१(१)

अथ द्वारं २१(१)

क्षार्थी २१(२)

गृहे शुभाशुभ निमित्तानि तेषां फलं च २२

इत्युक्तो वास्तुतंत्रेऽयो गृहादिस्तबको वरः।

श्रीराजसदनपृथ्वीपति सूत्रधार-

हेत्रामजो विविधशास्त्रकलासु धीरः।

मंगोरज्ञाति नाथेन निर्मिता वास्तुमंजरी। इति

श्रीसूत्रधारनाथविरचिते वास्तुमंजर्यां गृहादि

स्तबकः प्रथमः संपूर्णः ॥

प्रथमस्तबक श्लोक संख्या आसरे ६५८ की है।

८०
३४०
८४
८४
७०
६५८
६५८

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ प्रस्तारः

यदृच्छया लिखेद् गुरून् पूर्वस्याधो लघून् लिखेत्।
यथोपरि तथा शेषं भूयः कुर्यादमुं(मुं) विधिं॥
ऊने दद्याद् गुरू(रू) सर्व लघ्वंते प्रस्तरेदिति॥
प्रस्तार॥

अथ नष्ट

नष्टे रूपे बुधे श्रक्षे गुरूरूने समे लघु।
विषमेवेकमादाय दलयेत्पुनरेव हि इती नष्टं
उदीष्टे स्थापयेदंकान् ऊंम द्विगुणानीध
लघुस्थानोह्वेरंके सैषा स्यादेकमीश्रके इती उद्दीष्ट
प्रस्तारवर्णोस्तु समाने कामयानेकाति
तत संकल्पनं कुर्यादुपान्त्यस्थानी निवर्तनाद्
एकादी लघु विज्ञानं द्वितीयस्थानतो भवेत्॥
मेरुश्च खंडमेरुश्च सूची तद्वत् क्रिया।
द्वे भजो वीलषैतीये गेक कांकेन संकते॥
असत्वर्णा कमेणाद्यो मेरौ-चान्ये मेरुके।
एककांके लिषेत्संक्त भाद्यवंते च सर्वत
ऊर्ध्व सींकलने नाद्य पंक्तौ पंक्तौ च मध्यतः॥
आदौ सर्व गुरो रूपं ज्ञान्ते सर्वलघोर्भवेत्।
शेषे षेका इत्नीदामांसी द्वाप्रातेारुता रुता
इती मेरुखंडमेरु सूचीका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इष्टरूपे लघुन पुर्वभतेरुचितिर्वेद गुरून
पूर्वप्रस्तरे तावद्यावद्रूपविपर्ययः।
लघोः पृष्ठे गुरून् दद्यात् शेषास्तस्माल्लघुन्
पूर्वरूपे न्यसेत्। यावंतो वासतावंतो परे स्वपी।
खंडप्रस्तार इत्येष पताका छंदस्युविक
लघुक्रियौक संख्यातपङ्क्त्युपाय इति: इत्येवं
गुरोरधो लघुं न्यसेत् पूर्वशेषं यथोपरी प्रस्तारः।
गुरुभी पुरयेत् सर्व यावत् सर्व लघुं भवेत्॥
चतुर्गुरूणां प्रस्तारे षट्‌त्रिंशत्‌सर्वं भवेत्
लघुस्थाने ग्रहमुखद दलिं हृश्राद्धितो न्यसेत्

अथ ग्रहादिषु शुभानि—

वषाजविभमध्वाज्य वीणावाराणसीस्तनैः
हंसादर्शस्वर्णताम्रपात्रैर्निधिसमन्वितम्।
सद्भूतत्रीसंध्यासु ग्रहमेव यमुद्गीतं।
ततपद्म वल्ली नील सर्पाविद्वित दायकै।
नीलाग्नि बालीतौ सर्यादि ग्रहात्मीश्रीप्रदै।
(इत्यादि ग्रहशुभानि लिखितानि)

५५ आरंभमासफलं — गृहद्वारम्भे मार्गे ×××
आषाढे कार्तिके चित्ते (चैत्रे?) पौषे नभोन्य
जोरे [illegible] (भीः) वीशारसागरे ।
तथा मार्गगृहारंभे मासदोषो न चिन्तयेत् ॥११॥
तन्निषिद्धैपामासेहि स्वान कुर्वते हीने हतै ।
श्रावणे धनवृद्धि स्यात् प्रारंभे मंदिरास्य
सून्य भाद्रपदे मासे आश्विने कलहं सदा
कार्तिके भृत्यनाशः स्यात् कैश्चिद् धन्यागमस्मृतेः
मार्गे त्रिविधं धनं पौषे लक्ष्मी-चौर भयं क्वचित् ॥
माघे वह्निभयं विद्यात् फाल्गुने गृहे ततो ।
चैत्रे शोकागमो भर्त्य वैशाखे च धनागमः
ज्येष्ठे मृत्यु तथाषाढे पशुनाशश्च जायते
(अग्रे पूर्वापरास्यगेहार्थं इत्यादि)

अथ आयादीगानि—

भित्त्यन्तरे गृहे मानं भित्तिबाह्ये सुरालये ।
सभासु मध्ये वामे वा सद्मादौ चरणान्तरे ॥
भोजमते । सभूजमस्यषास्तु मुखमंडपसंयुते
गृहे दैर्घ्ये पृथुत्वे च मानं तत्वा विभाजयेत् ॥
अथ अपराजिते दैर्घ्ये दंडमिते हस्तैः अंगुलैश्च
[illegible]करोल्लिते । अंगुल अमिते व्यांशे आयादी
न प्रकल्पयेत् ॥ गृहे स्वायादिकं चिंत्यं

भवनस्वामिनो र्मतः। विचैतच्चेनु मां गीत्यै
लिंगज्ञानकृयोर्द्वयः।
व्यासे दैर्घ्यगुणेष्टाभिर्भक्ते शेषं ध्वजादयः।
ध्वजो धूम्रोऽथ सिंहश्च गो खरो गजवायसौ
आयाः स्युर्विप्रमाः शस्ता वर्णानां च सुरालये।
ध्वजो देवगृहे चैत्ये छत्रे वस्त्रे गजाश्रये।
कुंडमंडपवेदीषु यज्ञपात्रे न संस्थले ॥१
धूम्रोऽग्निजीविनी गेहे वह्निकुण्डे महानसे।२
सिंहः सिंहासने श्रेष्ठः ३ श्वानोऽन्त्यजगृहादिषु ४
वृषो धान्यासनस्थाने हट्टे गोष्ठे वणिग्गृहे ५
खरो वाद्ये खरजीवी वाद्यजीवीगृहेपि च ६
गजो हस्तिगृहे याने शयने योषितां गृहे ७
ध्वांक्षो मठादै यन्त्रेषु स्थित प्रागादि दुर्वीते ८
गृह स्वामि मुखास्तास्ते निष्क्रांतपदि स्थिता।
वृषे गजे तयोः सिंहं तेषां स्थाने ध्वजं न्यसेत्।
नाश्वेभगो गृहे सिंहं नान्यत्र स्वयदा वृषं।
पूर्वाद्यध्वक्रमाद्वारे ध्वज सिंहो वृषो गजः ॥
जयः। गजो गृहेषु सर्वेषां प्रासादेषु जलाश्रये।
द्वारे पूर्वमुखे शस्ता वृष सिंह गज ध्वजाः ॥
दक्षिणास्ये ध्वजः सिंहः पश्चिमास्ये ध्वजः शुभः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोमस्थे तु गजः शस्तः प्राहु सर्वमुखो ध्वजः॥
व्यासे दैर्घ्यगुणेऽष्टघ्ने भैर्भक्ते शेष मत्र भ।
दिव्यो गताऽश्विनी मैत्रं करः पुष्यः पुनर्वसु
मृगपौष्णं श्रुतिस्वाती नृणां। पूर्वाभरात्रयी
रोहिण्यार्द्राभरणास्यत्रो शाता नवराक्षसा।
प्रीती स्वदस्यो श्रेष्ठा मध्यामर मनुष्ययोः।
सुरराक्षसयोर्वैरं मरणं नरराक्षसोः॥
येऽष्ट भक्ते व्ययः शेषः आयाद्धीनस्तु शोभनः
अधिको राक्षसेस्तुल्यः पिशाचस्य ध्वजं विना॥
शान्तः [illegible] पोरस्तथो धाती श्रियानन्दो मनोहरः
श्रीवत्सो विभवाश्चिन्ता त्मकश्चाष्ट व्ययाः स्मृताः
आयामे विस्तरगुणे मूलराशिरतः स्मृतः।
मूलराशौ व्यये क्षिप्ते गृहनामाक्षराणि च॥
त्रिभिर्भक्ते त्रयः शेषः स स्यादिन्द्रादिकोंशकः॥
इन्द्रो यमो नृपोक्षेन्द्रः प्रासादप्रतिमादिषु।
यमो दुष्टे [illegible] मात्रे भैरवगृहवेश्मसु॥
राजांशश्च गृहे राजमहिरे श्वगजालये॥
(वास्तुमंजरी प्रथम स्तवकतः)
स्वामिभाद्वैस्मभान्तैक्ये शेषे ताराङ्कभाजिते।
त्रिधे च सप्त भमिता स्यायसान्या शुभावहाः
शान्ता मनोहरा क्रूरा विजया कलहावहा।
पद्मनी राक्षसी वीरा आनन्दा नवमी स्मृता॥

For Private And Personal Use Only

सप्त सप्ताग्नि भ्र दृभानि कृष्टरा पूर्वादिस्तु न्यसेत्
चन्द्रस्याद् गृहभे राशः पार्श्वे नाम्ने प्रतिष्ठित ::।।
आश्विन्यादि त्रये मेषे गृहे सिंहे मघात्रये।
मूलत्रये धनुः दोषा दादी भानुवरा स्वयाः।।
द्विर्द्वादश षडष्टमिते राशौ ग्रहवैरं च वर्जयेत्।।
भौम शुक्र ज्ञ चन्द्रार्क बुध भार्गव भूमिजाः।
गुरुर्मंद मंदो आचार्या मेषादीनाम धीश्वराः।
मित्रातपचन्दु भौमज्या बुधशुक्र शनीश्वराः
वैर मन्योन्य मेतेषां ताज्यं कर्म गृहे नायके।।
मूलादितो गृहोत्सेधे शोधो ... भाजिते।
यद्वा ... शेषे हते सप्तसमं ... ।।
भवनस्योदयं देवत्रणस्तेन गणयेत् सुधीः।।
वसुभि र्विभजेत् शोषोधिपतिः स स्मृतः शुभः।।
त्रिकूटः कर्णिकश्चैव धूम्राक्षे विरूपेश्वरः
पिङ्गलो दुंदुभश्चैव हतकांतो विनायकः।।
नाभादि योज्य निर्मुक्त लिङ्गादौ भूषणे।
त्रि पंच सप्त ... नव मितो श्रेष्ठ यथोत्तरं
अल्पदोषं ... न भयाय गृहादिकं
दिग्मूढं न शुभं गेहं स्तंभ द्वार सुवास्तवं।
सिद्धायतन तीर्थेषु सरित्सीगमेषु च।
स्वयंभु बाणलिंगेषु दिग्मूढेपि न दूषणं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथैवं साधयेद्रात्रौ दिवा वा शंकुना दिशाम्।
भूप्रदेशे समे शंको र्दिग्गतां मंडले च या।
छाया विशति निर्याति तया पूर्वापरा च दिक्॥
सरोनामार्धचन्द्राभं वृत्ताकारं महासरः।
चतुरस्रं तु भद्रं स्यात् सुभद्रं भद्रसंयुतं॥
नंदा भद्रा जया वापी विजया च क्रमाद्युता॥
लक्षणा वापिकूटैश्च एकद्वित्रिचतुर्मुखैः।
कूपाः स्युर्वेदहस्तादि द्वात्रिंशान्तविस्तराः।
श्रीमुखो विजयः प्रान्तो दुन्दुभिश्च मनोहरः॥
चूडामणिश्च दिग्भद्रो जयो नन्दः सशंकरः।
कुंडं युगास्रं भद्रं स्यात् सुभद्रं भद्रसंयुतं।
श्रीभद्रे जूंजे नंदपरीघमध्याभिरंयतः।
शतान्तमष्टहस्तादि चतुर्द्वारादि कारयेत्।
मध्यभद्रे जलशायी द्वारके कच्छश्रीकरं।
रुद्रान् गणाधिपस्कन्द दुर्वासो ब्रह्मनारदान्
क्षेत्रेश्वरी हरिहरं दिवाकरमुमेश्वरम्।
महिषघ्नी कात्यायनी चंडी दण्डपाणिं च भैरवं।
तदूर्ध्वं श्रीधरं मंडपस्थालासु विन्यसेत्॥
शिवलिंगानि रुद्रांश्च मातृस्सर्वान्गणाधिपान्
अवतारान्हरेर्दुर्गाभिलिलागंगादिनिम्नगा॥

For Private And Personal Use Only

ब्रह्ममूर्तिं लोकपालांस्तथा कुण्डस्य दक्षिणाद्।
पवेकाशयां फलं स्नाना गंगास्नानफलं त्रती
पुरादिमध्ये वाह्येवा कुर्यादुद्यानमुत्तमं।
गृहस्य वामदक्षे वा पेकद्विक्षि धनैः शतैः।
नानाद्रुमलतोपेतं कीलस्थान शतैर्वृतं।
तोयरसट्टघटायंत्रं धारा गृह विराजितम्।

अथ धारागृह-

पंचपंचाशकेहस्ते द्विर्विकान्तर्विवासकम्।
नवैकांशमध्यवेदी स्तंभाषष्ठीसतामिता।
नवैकांशं बाह्यतो भद्रमध्यवेकांश सीमनं।
चित्रैर्नानाविधैः रूपैः समन्तादवभासितं।
कपोटसंयुतोगावाद्(द्वा) रोहारोहराजितम्।
एकद्वारं चतुर्द्वारमेकानेकपुत्राऽन्वितम्।
सर्वदा कलत्री(त्रौ) राज्ञे कुर्याद्धारागृहं सुधीः।।

(वास्तुमंजरी स्तबक १)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्यात्मावस्था
जैसे [illegible] स्तबक [illegible]
में [illegible] लिखित [illegible]
ऐसा है—

[illegible] सारस्सगा, सोम [illegible] सुरमा।
[illegible] आठ अरसुरा, [illegible] जिता ईयो॥

[illegible] में [illegible] आठवें चारहवें को
[illegible] छूप [illegible] माने गये हैं। [illegible] यथा—
"व्यञ्जन्त [illegible] [illegible] स्वौः॥

For Private And Personal Use Only

यदि दिनशुद्धि और वार है पर लग्नशुद्धि नहीं है तो ~~[illegible]~~ शीघ्र कार्य अथवा विजयमुहूर्त का समय लेना अच्छा है।

~~[illegible]~~

यद्यपि ज्योतिषशास्त्रों में स्थिर लग्नों को श्रेष्ठ कहा गया है तथापि ज्योतिषशास्त्र का कहना है कि स्थिर लग्नों के ~~[illegible]~~ द्विस्वभाव लग्नों को भी श्रेष्ठ माना है।

प्रतिष्ठा के लग्न में १।४।५।७।९।१० इन स्थानों में सौम्य शुभ ग्रह हों और ३।६।११ इन स्थानों में रवि मंगल, शनि, राहु ये क्रूर ग्रह बैठे हों तो वह लग्न सर्वश्रेष्ठ पूर्णबली समझना चाहिये। ८ वें ~~[illegible]~~ स्थान में क्रूर ग्रह अति अशुभ और सौम्य ग्रह मध्यम माने गये हैं। नीचे हम प्रतिष्ठा कुंडली देते हैं ~~[illegible]~~।

प्रतिष्ठा लग्न कुंडली

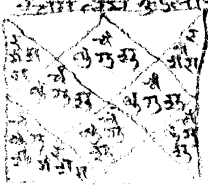

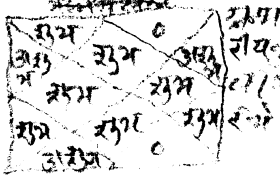

शुभ ग्रह
रखने से
[illegible]

५ वृषवास्तुचक्र पाँचवाँ बृहज्ज्योतिषार्णव में
वह्नि ३ बाहु २ भूमि ७ बाहि २ कृत ४ नागाक्ष ८ सूर्य भानु
क्रमात् शुभाशुभ आनन्द [illegible] मेहार मे मुनीश्वराः ।।
३ श्रे। २ ने। ७ श्रे। ३ ने। ४ श्रे। ८ ने।
इसमें अभिजित् नहीं लिया।
६ वृषवास्तुचक्र छठा गणपति में —
३ ने। ४ ने। ४ श्रे। ३ श्रे। ४ श्रे। ३ ने। ३ ने। ३ ने।
इस चक्र में भी अभिजित नहीं लिया।
७ वृषचक्र सातवाँ मिताक्षरा में —
[illegible] नेष्टानि, [illegible] भात्।
[illegible] शुभानि [illegible] ।।
७ नेष्ट। ११ श्रेष्ठ। १० नेष्ट।
इस चक्र में अभिजित लिया है।
अभी ये भिन्न भिन्न वास्तुचक्र देने का प्रयोजन [illegible] कि शुद्धि विशेष रह अच्छे योग
मिलने पर भी [illegible] इस वाली
७ वाँ वृषवास्तु चक्र जो मुहूर्तचिन्तामणि विशेष इनके
आधार पर पंचांगों में छपा रहता [illegible] अधि-
कांश आजकल ज्योतिषी [illegible] को [illegible]
कर इसके माने जाने से मुहूर्त को [illegible]
कर देते हैं अतः को [illegible]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो तो वास्तु-चक्र शुभ नहीं। उसके बाद के ४ नक्षत्रों में से कोई उत्पन्न हो तो वास्तु-चक्र शुभ है। उसके बाद के ३ नक्षत्र अशुभ और फिर उसके १० नक्षत्र शुभ हैं।
इस चक्र में अभिजित ग्रहण किया है।

२ वास्तु-चक्र दूसरा — नारचन्द्र जैन ज्योतिष का

[illegible]
[illegible]
[illegible]॥

३ श्रेष्ठ। ४ नेष्ठ। ४ श्रेष्ठ। ३ श्रेष्ठ। ४ नेष्ठ। ४ श्रेष्ठ।
३ नेष्ठ। २ नेष्ठ।

इस चक्र में अभिजित नहीं लिया। यह चक्र आरम्भ और प्रवेश दोनों मुहूर्तों में देखा जा सकता है।

३ गृहवास्तु तीसरा — भूपालवल्लभ में —
३ श्रे०। ४ ने०। ४ श्रे०। ३ ने०। ४ ने०। ४ श्रे०। ३ श्रे०। २ ने०।
इस चक्र में भी अभिजित नक्षत्र नहीं लिया।

४ गृहवास्तु चौथा मुंजादित्य निबन्ध में —
३ श्रे०। ३ ने०। ४ ने०। ४ श्रे०। ३ श्रे०। ४ श्रे०। ४ ने०। २ ने०।
इस चक्र में अभिजित लिया है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातिमानुसार (स्थान) चक्र —

	ब्राह्मणो	क्षत्रियो	वैश्यो	अन्यामे	स्थान
संक्रांति	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१	आग्नेये
संक्रांति	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	२।३।४	ईशाने
संक्रांति	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	५।६।७	वायव्ये
संक्रांति	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	८।९।१०	नैऋते

वृषवास्तु

खात का स्थान निश्चित करने के लिये जो वृषवा-
स्तु जितना जरूरी है उतना ही मकान, मंदि-
र आदि का आरंभ करते समय ~~वृषवास्तु का देखना भी जरूरी है~~ "आरंभे
वृषभं वास्तुः" इस वचन के आधार से
वृषवास्तु भी अवश्य देखना चाहिये।
इस समय हमारे सामने दो प्रकार के वास्तु
चक्र हैं जो नीचे दिये जाते हैं।
सूर्य नक्षत्र से [illegible] चक्र —
३ नेष्ट।४ श्रेष्ठ।४ नेष्ट।४ श्रेष्ठ।३ नेष्ट।४ श्रेष्ठ।
३ नेष्ट।३ श्रेष्ठ। अर्थात् जिस नक्षत्र पर सूर्य
स्थित हो उससे [illegible] तक में शुभ दिन [illegible]

For Private And Personal Use Only

२

कुम्भे मन हानिः स्यात् कुम्भेऽच कुम्भे स्नेमयेत्॥

यहीं पर पाठकों के समझने के लिये ~~[illegible]~~ शिल्पशास्त्रानुसारी और ज्योतिषशास्त्रानुसारी ~~[illegible]~~ खात मे कहिये जाते हैं ।

शिल्पशास्त्रानुसारी खात चक्र —

पूर्व

पश्चिम			उत्तर
	ईशाने खात	आग्नेये खात	
	धन, मकर, कुंभ ~~[illegible]~~ पौष, माघ, मार्गशीर्ष ~~[illegible]~~	मीन, मेष, वृष ~~[illegible]~~ चैत्र, वैशाख ~~[illegible]~~	
	कन्या, तुला, वृश्चिक ~~[illegible]~~ आश्विन कार्तिक ~~[illegible]~~	मिथुन, कर्क, सिंह ~~[illegible]~~ आषाढ, श्रावण ~~[illegible]~~	
	वायव्ये खात	नैऋत्ये खात	

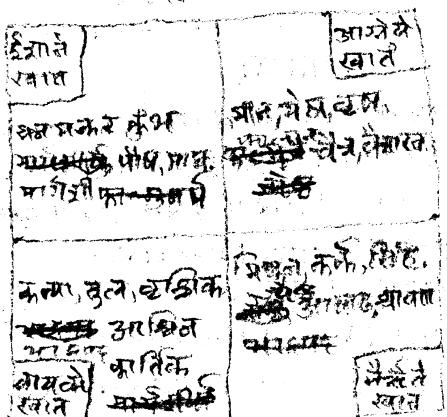

दक्षिण

होता है। मुख के स्थान स्थान करके
स्पर्श होता है और कु-
क्षि के भागमें आयति मुख में
तो उन्हें क्रम से चौथे [illegible] कोणा
में स्पर्श करने से कुशल होता है।
तिथि को तोड़ी केस्थानमें शुक्लादि
[illegible]
[illegible] महाराज में
दि २-३, देवालयमें [illegible] दि ३-३
[illegible] में [illegible] ३-३ [illegible]
स्तंभ में [illegible] १-१ कोण में [illegible]
[illegible] करती है [illegible] विलोम गति से
[illegible] चौथे कोण में स्पर्श करता है।
इस [illegible] में मुजदिलानिबन्ध के [illegible] उद्धृत
मत द्योतीय है—

ईशानतः सर्पति कालसर्पो, विहाय सृष्टिं गणयेद् दिशो
पद्मा [illegible] मुखमध्यपुच्छं, [illegible] [illegible]
[illegible] गृहे [illegible]
अन्त्याये [illegible] [illegible] ॥
[illegible] मुखे च [illegible] हानि, पृष्ठे तु स्वामिघातकम्।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शेष का मुख्य हो [illegible] वहांसे [illegible] का गो
[illegible] मैं [illegible] हुए इसीलिये
[illegible] (कोण) में चले [illegible]
[illegible] का [illegible] होगा।
शेष मुख्य [illegible] हो तो स्वात [illegible]
कोणमें शेष मुख्य [illegible] होगा
[illegible], शेष मुख्य [illegible] स्वात
आग्नेकोणमें, शेष मुख्य [illegible]
है [illegible] कोण में आयेगा। यह [illegible] शास्त्र
का लेख है।

अतः ज्योतिष शास्त्र का विधान है (कि)
[illegible] शास्त्र के [illegible] अनुसार शेष
~~का मुख [illegible]~~
[illegible] से [illegible] जाता है
[illegible] मुख हो [illegible] आयता [illegible]
[illegible] मे [illegible] और आग्नेयकोण
[illegible] होता है [illegible]
[illegible] पर [illegible] करने से [illegible] होता
है [illegible] स्वात करनेसे [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और मंगल्य कामोंमें शुभफलदायक हैं। विशेष कर शांतिक पौष्टिक कामोंमें शान्ति पुष्टिके देनेवाले हैं।

शान्तिदातोंमें पूर्वाभाद्रपद, आर्द्रा, कृत्तिका, भरणी इन के सिवाय प्रतिकूल और अशुभ फल दायक हैं। शेष ताराएं फलदायक हैं।

इसलिये सबके निकाल लिखते पद्य पढिये -

निर्ऋति मित्र सापौ रवाष्ट्रे ... ॥
... शुभकर्माणि दुःखशोकप्रदानि च ॥
... ॥ ६ ॥
शान्तिकपौष्टिककर्मसु विशेषतस्तत्प्रदा: सततम् ॥ ७ ॥

वारपरत्वेन निषिद्ध ज्ञान -

रविवार को उत्तराफाल्गुनी, सोमवारको मूल तथा रोहिणी, मंगलको मघा तथा कृत्तिका, बुधवारको आर्द्रा अश्विनि, गुरुवार को मूल तथा पूर्वाभाद्रपद, शुक्र को रोहिणी तथा मघा और शनिवार को आश्लेषा तथा आर्द्रा का ज्ञान निषिद्ध है। लिखा है -

अर्यम्णार्कवारे हिमकरदिवसे राक्षसब्राह्मदेवो,
पित्र्याग्नेयौ-त्र्याग्नी तो दितिसुतदिवसे सौम्यतारे निषिद्धः।
देवाचार्यो जीववारे भृगुतनयदिने ब्राह्मपित्र्यौ मुहूर्तो,
सार्पौ त्रिग्मरश्मिः प्रियसुतदिवसे वर्जनीया मुहूर्तः ॥
॥८॥

For Private And Personal Use Only

११(३) (नक्षत्र-होरा)

होरामान और उसमें करने के काम

दिनमान का पंद्रहवां भाग एक दिन मुहूर्त का और रात्रिमान का पंद्रहवां भाग एक रात्रि मुहूर्त का मान समझना चाहिये।

नक्षत्र स्वामी के [illegible] होरा [illegible] में [illegible] उसका नक्षत्र ही समझना चाहिये। जो कार्य जिस नक्षत्र में करना कहा है वह उसके होरा में करना चाहिये। दिशाशूल, तारा, चंद्रादि सब बातें नक्षत्र की तरह नक्षत्र होरा में भी जाननी चाहिये।

इस के संबंध में निम्नोक्त श्लोक पढ़िये -

पञ्चदशांशो दिवसे होरामानं तथैव यामायाः।
नक्षत्रेश्वरसदृशौ चारौ च तन्नामभिश्च तत्॥४॥
नक्षत्रे [illegible] गदितं यस्मिंस्तत्कर्म तन्होरायां कुर्यात्।
दिक्शूलतारादिकमपि चन्द्रादिकञ्च विज्ञेयम्॥

पाप सौम्य होरा

दिन नक्षत्रों में मूल, मघा, अश्लेषा, आर्द्रा, विशाखा और पूर्वाफाल्गुनी इतने नक्षत्रों के होरा पापमुहूर्त हैं इनमें शुभ कार्य करने से दुःख और शोक की प्राप्ति होता है। शेष अनुराधा, भरणी, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, रोहिणी, ज्येष्ठा, कृत्तिका और उत्तराफाल्गुनी के होरा सौम्य हैं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११(२)
~~दिवस मुहूर्त~~ (नक्षत्र नाम)

~~जिस दिन जितना दिनमान हो उसका पंद्रहवां भाग एक मुहूर्त समझना चाहिये इसी प्रकार रात्रि मुहूर्तों के संबंध में भी जान लेना चाहिये।~~

दिन के १५ नक्षत्र नाम

१ आर्द्रा, २ अश्लेषा ३ अनुराधा ४ मघा, ५ धनिष्ठा ६ पूर्वाषाढ़ा ७ उत्तराषाढ़ा ८ अभिजित ९ रोहिणी १० ज्येष्ठा ११ विशाखा १२ मूल १३ शतभिषा १४ उत्तराफाल्गुनी १५ पूर्वाफाल्गुनी। ~~ये दिन के १५ नक्षत्र नाम हैं~~

रात्रि के १५ नक्षत्र नाम -

१ आर्द्रा २ ~~पूर्वाभाद्रपद~~ ३ ~~उत्तराभाद्रपद~~ (उत्तराभाद्रपद ४ रेवती ~~[illegible]~~ ५ अश्विनी ६ भरणी ७ कृत्तिका ८ रोहिणी ९ मृगशिरा १० पुनर्वसु ११ पुष्य १२ श्रवण १३ ~~[illegible]~~ हस्त १४ चित्रा १५ स्वाति।

उक्त दिन रात के १५-१५ मुहूर्तों के स्वामी -

शिव-सर्प-मित्र-पितरो वसु जल विश्वा ब्रह्म जन्म हिताः।
सुरप द्वि दैवत दनुजाः, वरुणार्यमभगाः॥१॥
दिनमुहूर्ताः कथिता दश पञ्च मितास्तथैव रात्रेश्च।
रुद्राजपाद देवा हिर्बुध्न्याः पूषा स्तनश्च पुषाख्याः॥२॥
अश्वियम वह्नि धातृ सुधाकरादित्य धिष्ण्य सुरमंत्री॥
हरि ताक्ष्य करला सूर्य गणा श्चेति मूहूर्ताः॥३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

([illegible] का नक्षत्र की परिक्रमा)

[illegible] नक्षत्रों में जो जो अश्लेषा [illegible]
[illegible] होता [illegible] [illegible]
[illegible] में
स्नान करे [illegible] और [illegible]
[illegible] में [illegible] स्थापन करे।
इस [illegible] से [illegible]
[illegible] है —
[illegible] [illegible]:।
[illegible]।
[illegible]
[illegible]:॥
[illegible] (मुहूर्त)
[illegible] का काम और [illegible] किया जाता
है [illegible] को [illegible]
[illegible] है।
[illegible] [illegible] है
[illegible] होते हैं
[illegible] जाते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[illegible]

ये चार शुभ हैं। ब्याव में ही नहीं सब कामों के लिये ये चार
कार्य साधक हैं। तब शुद्ध [illegible] इन वारों में कहा हुआ
काम ही सफल होता है। कहा है— तिथि-
[illegible] सर्व कर्म [illegible] सिद्धिदाः
[illegible] कार्य सिध्यति॥३॥

[illegible]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[illegible] आरम्भसिद्धि, राशि योग, [illegible] योग, कुमार योग [illegible] में से कोई भी [illegible] में सभी योगों का [illegible] अच्छा होता है।

[illegible] करता

करणों में से कितनेक वर्जित हैं। जब तक [illegible] की भद्रा दिन में [illegible] भाग में आती हो तो भद्रा का दोष नहीं है।
(आरम्भसिद्धि [illegible] १२(४))

[illegible]

हो सकता है। यदि दिन शुद्धि लग्न शुद्धि दोनों साधारण हो तो कार्य मुश्किल से पूरा होता है अतः दोनों में से एक की शुद्धि तो अवश्य बलवान् होनी ही चाहिये। लग्न शुद्धि बलवान् हो तो सामान्य पंचांग शुद्धि और चंद्र बल देख कर मुहूर्त दे देना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भद्रा (३)

जन्मनि [illegible] मौ: सतिर्का [illegible] बाहु,
[illegible] कृष्णे [illegible] हि तो छे:।
[illegible] भाः करोति,
[illegible] ॥ ८॥

भद्रा का पुच्छ —

जो भद्रा का मुख ऊपर श्लोकों में लिखा है
सो ही भद्रा का पुच्छ ग्रहण किया है। भद्रा
पुच्छ जानने की रीति नीचे मुजब है।
८।१० शुक्ले तिथि भद्रा की प्रथम ५ घड़ियों के
बाद की ३ घड़ियों में भद्रा का पुच्छ होता है।
७।१४ को भद्रा की १२ घड़ियों के बाद की ३
घड़ियों में भद्रा का पुच्छ जिनोगा है। ३।११
को भद्रा की ५१ घड़ियों के बाद की ३ घड़ियों
में भद्रा का पुच्छ समझना चाहिये और
४।१८ को भद्रा के अंत की घड़ियों में इसका
पुच्छ रहता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दैनिक प्रताप का ६ महीने का
चंदा

For Private And Personal Use Only